प्रभु
का
आनन्द

बख्त सिंह

अनुक्रमणिका

बलवन्त आनन्द

मुफ्त आनन्द

बढ़ता हुआ आनन्द

सीखने में आनन्द

देने में आनन्द

संयोग में आनन्द

स्थायी आनन्द

१. बलवन्त आनन्द

"प्रभु का आनन्द तुम्हारा बल है।"

(नहेमायाह ८:१०)

परमेश्वर का आनन्द उसके सब बच्चों के लिए है। वे सब इसे प्राप्त कर सकते हैं जो उसके वचन को दिन प्रति दिन अपने हृदयों में प्रवेश करने देंगे और जो कुछ भी वह उस वचन में से दे उसे ग्रहण करेंगे। नहेमायाह के इस आठवें अध्याय में हम, परमेश्वर के वचन के प्रति विद्रोह और अनाज्ञाकारिता के कारण सत्तर वर्ष तक बाबुल में बन्धुवाई में रहे इस्राएलियों को एक मत और एक मन होकर परमेश्वर का वचन नए सिरे से सुनने के लिए एकत्रित पाते हैं। जब परमेश्वर के सेवकों ने वचन का अर्थ प्रकट किया तो उसके हृदय आनन्द से भर गए। और हम पढ़ते हैं कि "वहाँ बहुत बड़ा आनन्द हुआ" (८:१७)।

हमारा भूतकाल भी हमारे हठीलेपन तथा मूर्खता के कारण निष्फल और असफलताओं से भरा हुआ हो सकता है। परन्तु प्रभु हमारे भूतकाल को क्षमा कर देना चाहता है और अपने पास वापस लाकर हमें एक नया आनन्द-प्रभु का आनन्द देना चाहता है। वही आनन्द हमार बल होना है – एक आनन्द जो उसी क्षण आरम्भ हो जाता है, जब हम परमेश्वर की ओर फिरते हैं। और जैसे जैसे हम उसके साथ कदम पर कदम चलते जाते हैं यह कई गुणा बढ़ता जाता है।

सर्व प्रथम हम परमेश्वर के वचन से इस आनन्द के सात कारणों का अध्ययन करेंगे। तब हम देखेंगे कि किस प्रकार इसका अनुभव प्राप्त किया जा सकता है, और किस प्रकार यह कई गुणा बढ़ सकता है और हमारे अन्दर और अधिक शुद्ध और भरपूर और गहरा होता जा सकता है।

“वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं। ... और उसने उनसे कहा इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं” (लूका १०:१७, २०)।

मनुष्यों की रुचि सर्वदा आश्चर्य कर्मो से जगाई जाती है। हम में से कौन आश्चर्य कर्म देखना या स्वयं करना नहीं चाहता? फिर भी यहाँ प्रभु यीशु कहते है कि आनन्द का वास्तविक आधार यह नहीं है, परन्तु यह सच्चाई कि उसके द्वारा हमारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं। सच्चे स्वर्गीय आनन्द का यही आधार है। यह हमें अकथनीय व महिमा से भरपूर आनन्द देता है – वह आनन्द जिसे कोई हम से छीन नहीं सकता। “आनन्द का आरम्भ” यहीं से होता है और निर्धनता, रोग और क्लेष इसे हम से दूर नहीं कर सकते।

क्या आपका नाम जीवन की पुस्तक में प्रभु यीशु मसीह के द्वारा लिखा गया है। उनके खीले से छिदे हाथ के द्वारा लिखा गया है? अपने पापों से मन फिराइये। उसके लोहू में धुल जाइये। उसकी धार्मिकता के वस्त्र पहन लिजिए। तब और केवल तब ही आपका नाम वहाँ लिखा जाता है।

“उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए” (यशायाह ६१:१०)। जब हम ये वस्त्र पहिन लेते हैं तब आनन्द की भरपूरी होती है। ये हमारी आत्मिक नग्नता को ढक देते हैं, और हमें स्वर्गीय सुन्दरता प्रदान करते हैं, जिस में हमें पवित्र परमेश्वर के सामने खड़े होने का हियाब होता है। ये हमें प्रत्येक स्थान पर जीवित परमेश्वर को पुकारने का हियाब और स्वतन्त्रता देते हैं। ये स्वयं हमारे प्रभु ही की धार्मिकता तथा जीवन है। जब हम प्रभु यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण करते हैं तब उनका जीवन हमारी आत्माओं को ढक लेता है। यही है जिसमें हम “अति आनन्दित होते हैं” सांसारिक महिमा या समुद्धि में नही परन्तु इस

आश्वासन में कि हम स्वयं प्रभु के द्वारों ढके हुए हैं। "तुम ने मसीह को पहन लिया है" (गल॰ ३:२७)।

क्या यह आनन्द आपके हृदयों में रहता है और आप में दिन प्रति दिन कार्य करता है? क्या आपके पड़ोसी आपके मुख पर इस प्रकार के आनन्द को देख सकते है? कृपया बिना विलम्ब किये निश्चित कर लीजिए कि आपके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है (भजन संहिता १६११०)।

परमेश्वर की उपस्थिति में रहने पर यह आनन्द कई गुणा बढ़ता जाता है, और केवल परमेश्वर की उपस्थिति में ही आनन्द की भरपूरी है। अनेक लोग इस बात की साक्षी दे सकते हैं कि उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं, परन्तु वे यह नहीं कह सकते कि वे सर्वदा परमेश्वर की उपस्थिति में रहते है। परमेश्वर के बच्चों के साथ रह कर और उनके साथ आराधना व कार्य करते हुए भी परमेश्वर के सम्पर्क में न होना सम्भव है। हम प्रार्थना सभा में भी हो सकते हैं फिर भी हो सकता है उसकी उपस्थिति का अनुभव न करें — उनके सम्पर्क से अनभिज्ञ हों।

परन्तु यदि आप उनकी उपस्थिति का अनुभव नहीं करते तो आपके पास पूरा आनन्द नहीं है। यह कई कारणों से हो सकता है परन्तु यह स्वयं आपकी ही गलती हो सकती है। परमेश्वर के बच्चे होने के नाते, बशर्ते कि आपका हृदय शुद्ध हो और उसके समक्ष आपका विवेक सही हो, आप उसकी उपस्थिति का अनुभव और ज्ञान प्राप्त कर सकते है और करना भी चाहिए। परमेश्वर से हमारी प्रार्थना है कि आप उस जीवित और

प्रिय परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के इस रहस्य को सीख जाएँ, क्योंकि उसका यही उद्देश्य तथा अभिप्राय है।

"यहोवा को अपने सुख का मूल जान और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा" (भजन ३७:४)।

जिस आनन्द की हम नये जन्म के समय प्राप्त करते है, तथा जो परमेश्वर की संगति में रहने पर कई गुणा बढ़ता जाता है वह अति बलवन्त हो जाता है जब हम प्रभु में अपनी प्रसन्नता प्राप्त करते हैं और अपनी दूसरी इच्छाओं को पूर्णत: भूल जाते है, चाहे वे खाने या पीने की हों या मित्रों, या पदोन्नति या नाम के लिए हों या बाइबल के कुशल ज्ञान के लिए ही क्यों न हों। यदि हम स्वयं को प्रभु में प्रसन्न रखें तो जो कुछ भी ये वस्तुएँ ला सकती हैं उनसे कितना अधिक हमें प्रभु के आनन्द में दिया जाएगा।

जो पर्वतों के सौन्दर्य को जानते है, वे उदाहरण के लिए 'एवरेस्ट' का एक दृश्य पाने के लिए काफी समय और धन व्यय करेंगे। वे आफ्रिका या चीन से उसकी एक झलक मात्र पाने के लिए यात्रा करेंगे, फिर उस स्थान तक पहुँचने के लिए जहाँ से वे शिखर को देख सकें, काफी कठिनाई के साथ पहाड़ी यात्रा और चढ़ाई करेंगे। शिखर अधिकांश समयों में कुहरे ओर बादल के पीछे छिपा रहता है, इसलिए उन्हें इस देखने के स्थान पर कुहरा उड़ाने के लिए हवा की प्रतीक्षा में कई घंटो तक असुविधा में रहने को बाध्य होना पड़ सकता है – यह सब कुछ इसलिए कि वे कुछ मिनटों के लिए सूर्य किरणों से प्रकाशित, सुन्दर हिमाच्छादित शिखर को देख सकें। फिर कुहरा लौट आता है और उसे फिर से ढक लेता है। परन्तु वे आफ्रिका या चीन, जापान या अमेरिका को वापस जाते हैं, और अपने मित्रों की एकत्रित करते हैं और उन्हें बताते हैं जो कुछ उन अद्भुत पर्वतों में देखा।

कुछ मिनटों की झलक उन्हें इतनी प्रसन्नता दे सकती है। परन्तु क्या हमारा प्रभु समस्त लोगों में प्रमुख और परम सुन्दर नहीं है उसकी महिमा कभी फीकी नहीं पड़ती। फिर आइये, हम उसकी महिमा को अधिक से अधिक देखने के अभिलाषी हों।

मत्ती १७ में यूहन्ना ने प्रभु यीशु का रुपान्तर पर्वत पर देखा। वह एक अद्भुत अनुभव था। परन्तु प्रकाशित वाक्य १ में वही यूहन्ना अपनी वृद्धावस्था में उन्ही प्रभु को उसकी पुनरुत्थान की महिमा में देखता है, और उन्हें और भी अधिक महिमामय पाता है। यही हमारी प्रसन्नता भी होनी चाहिए। जो वह हमें देता है वह नहीं, परन्तु जो वह स्वयं है, इसलिए नहीं कि वह हमारे शरीरों को चंगा करता है या हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, परन्तु चूंकि हमने उसके प्रिय मुख की महिमा की झलक पाई है, यही वह बात है जो हमारे हृदयों को आनन्द से भर देती है।

"हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ" (भजन ४०:८)।

इस तरह हमारा आनन्द शुद्ध किया जाता। जब हमने पहले पहल प्रभु को जाना, हम यह नहीं जानते थे कि परमेश्वर की इच्छा कैसे खोज निकालें, उसकी आवाज कैसे सुनें, कैसे पहिचाने, तथा वहाँ वह और कैसे कार्य कर रहा था। परन्तु जैसे-जैसे हम उसके साथ चलना आरंभ कर देते है और उसके साथ अधिक से अधिक निकटता में रहने लगते हैं हमें ज्ञात होता है कि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं (२ कुरि०६:१)। जब हम परमेश्वर के वचन को प्रचार होता हुआ सुनते है और प्रभु यीशु मसीह का नाम ऊँचा उठाया जाता और ग्रहण किया जाता देखते हैं और उसका कार्य होता देखते हैं, तब हमारे हृदय आनन्द से उछलने लगते है हम सभी शालीन वस्त्रों या घरों या मित्रों या जीवन में अन्य भली वस्तुओं से बढ़ कर प्रसन्नता इसमें पाते है।

जब प्रभु हमारी प्रसन्नता है, तो उनका नाम, उनकी भलाई और उनकी महिमा हमारे अतिशय आनन्द होते है और हम उनकी इच्छा को जानने और पूरा करने की अभिलाषा रखना आरंभ कर देते हैं। परन्तु हम एक क्षण के लिए रुकें और विचार करें। जब हम गतसमनी में उसकी यातना को स्मरण करते हैं, क्या हम सच्चाई से उनके साथ, कह सकते है 'मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी की जाए? '

प्रभु को जानने से पहिले हम हलकेपन से इस प्रकार की प्रार्थना कर सकते थे: 'प्रभु, मुझे मद्रास में रखें और हर इतवार को मैं आपको १० रूपयं दूँगा; या, हमारे पहिले बच्चे के रुप में हमें एक पुत्र दें और मैं आपको १२ रुपये दूँगा, इसी बीच में ये योजना भी बनातें जा रहे हैं कि यदि लड़की हुई तो सिर्फ १ रुपया ही देंगे। यदि प्रभु ने हमारी विनती मान ली हमने उन्हें ज्यादा दिया, पर यदि उन्होंने न मानी तो हमने उन्हें कम दिया। या हम कह सकते थे कि, प्रभु नौकरी से अवकाश प्राप्त करने पर मैं आनन्दपूर्वक आपकी सेवा करूँगा, परन्तु निश्चय ही उससे पहिले मुझे अपने बच्चों की शादी कर लेने दीजिए।

जी हाँ, हम हमारे दाँत बाहर गिर जाते हैं और बाल सफेद हो जाते हैं तब हम प्रभु की सेवाा करने को तैयार होंगे। हम परमेश्वर की इच्छा पुरी करने के बारे में बातें तो करते है पर जब उसकी इच्छा पूरी करना महँगा होता हे, तब हम बच निकलने का मार्ग ढूंढ़ने का प्रयन्त करते है। यह उसकी इच्छा को पूरी करने से प्रसन्न होना नहीं है। जब आप आनन्द से कह सकते हैं, 'प्रभु मुझे यहाँ रखे, या किसी और स्थान पर भेज दें; जब हम सच्चाई के साथ अपने पूरे हृदय से कह सकते है 'आपकी इच्छा पूरी की जाए', तब वह आनन्द उसकी इच्छा पूरी करने के लिए हमारा बल होगा। बाहर से हमें गतसमनी का कुछ दु:ख पीड़ा, मार सहन करना पड़ सकता है परन्तु हमारे हृदय उस बल से बलवन्त होंगे जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से आता है।

क्या आप चाहते हैं कि प्रभु का आनन्द आपका बल बन जाए? तो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में प्रसन्नता प्राप्त करना सीख लिजिए। समय खोजिए, समय निकालिए, समय दीजिए, कि उसकी इच्छा खोज निकालें, फिर उसे पूरा करना अपनी प्रसन्नता बनाइए। ऐसा करने के लिए आपकी अनेक कठिनाइयाँ सहनी पड़ सकती है और एक लम्बे मार्ग की यात्रा करनी पड़ सकती है, परन्तु सच्चाई बनी रहती है कि आप उसकी इच्छा पूरी करते रहेंगे, और वह आपको सम्पूर्ण आनन्द और सुख प्रदान करेगा।

"माँगो तो तुम पाओगे, ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" (यूहन्ना १६:२४)।

सीखिए कि प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का क्या अर्थ होता है। इससे पहिले चेले कई वस्तुएँ माँगते रहे थे, परन्तु उन्होंने प्रभु यीशु मसीह के नाम के अधिकार को नहीं समझा था। परन्तु उसके बहुत ऊँचे उठाए जाने के और उसके पवित्र आत्मा के उन पर उतर आने के बाद उन्होंने जाना था कि उनके पास कैसा अधिकार था। ईश्वरीय रहस्य यहीं पर है। और वह शक्ति, वह अधिकार अब इस पृथ्वी पर हमारे द्वारा प्रयोग किए जाने है। हमारा बल प्रभु यीशु मसीह के नाम में है।

हमारा बल भवनों, या सम्पत्ति, या उपाधियों, या धन, या संख्या में नहीं होता। कोई अन्तर नहीं पड़ता कि हमारा मूल्य २ रूपये या १० रुपये या १० लाख रूपये हो; कोई अन्तर नहीं कि हम अशिक्षित हैं अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त हैं या हम झोपड़ी में या एक पेड़ पर या ईट, पत्थर या मिट्टी के मकान में रहते है हमारा बल वहाँ नहीं है। हमारा बल अकेले (उसके) नाम में है।

हम में से बहुत प्रार्थना करते है, परन्तु हमारी प्रार्थनाओं का मूल्य सिर्फ व्यर्थ शब्द रहता है। हम अच्छी फूलों जैसी भाषा में लंबी प्रार्थनाएँ करते है। परन्तु जब कष्ट आता है

या शत्रु, तो हम कही जा छिपते है और आँसू बहाते है। इसके स्थान में हमें करना क्या चाहिए? ऐसे समयों में हमारा बल कहाँ होता है। निश्‍चय ही हमारे शब्दों में नहीं, परन्तु प्रभु यीशु मसीह के नाम के अधिकार को प्रयोग करने में हमारा बल होता है। शत्रु चाहे बाढ़ की नाई आए (यशायाह ५९:१९) ; या वह गरजने वाले सिंह की नाई आए (१ पतरस ५:८), हम उसे प्रभु यीशु मसीह के नाम में बाँध देंगे। यही हमारा आनन्द और बल है। सांसारिक रुप में हम निर्धन, अनपढ़ और दुर्बल हैं, पर मसीह में जयवन्त से भी बढ़ कर हैं।

क्या आप पूरी सच्चाई से कह सकते है कि प्रार्थना में यह अधिकार आपको प्राप्त है? जिस तरह से आप प्रार्थना करते हैं उससे संभव है एक गौरैया भी न भगा सकें। फिर कैसे आप एक सिंह को भगा देने की आशा रखते हं? परमेश्‍वर के वचन के अनुसार, यदि हम (उनके) 'नाम' में प्रार्थना करें, तो वह हमारी प्रार्थनाओं से काँपने लगेगा। हम प्रभु यीशु मसीह के नाम के अधिकार को प्रयोग करना सीखें। तब हमारे जीवन 'उनकी' विजय के आनन्द में बलवन्त हो जाएँगे।

"ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" (१ युहन्ना १:४)।

जब परमेश्‍वर के वचन के छिपे हुए भेद हम पर प्रकट होते है, तब हमारें हृदय उस आनन्द से भर जाते हैं, जो हमें बलवन्त बनाता है। हमारा बल सिर्फ बाइबल ज्ञान में ही नहीं होता और न अच्छे उपदेशों को सुनने में, परन्तु जब प्रभु यीशु स्वयं, अपनी आत्मा के द्वारा, उनके वचन के भेदों को हम पर प्रगट करते हैं, तब हम बलवन्त होते है।

"तूने इन बातों को ... बालकों पर प्रगट किया है" (मत्ती ११:२५)। "मैं ... तुझे .. बड़ी-बड़ी बातें बताऊँगा" (यिर्मयाह ३३:३)। जब हमारा प्रिय उद्धारकर्ता हम पर अपने जीवित वचन को खोल देता है वही हमारा बल होता है। जब हम उसके वचन पर

मनन करते है तो जैसे-जैसे परमेश्वर हम पर अपने आपको अधिकाधिक मात्रा में दिन प्रति दिन प्रगट करता है, वैसे-वैसे हम अपने आनन्द को अधिकाधिक बढ़ता हुआ पाते है। दिन प्रति दिन जब हम धैर्य से उसकी सुनने की प्रतीक्षा करते हैं तो वह हमें कुछ ताजा देता है और जैसे परमेश्वर का वचन हमारे लिए वास्तविक होता जाता है वह हमारा आनन्द और बल बनता जाता है।

"वे इस बात से आनन्दित हो कर..चले गये कि, हम उसके नाम के लिए निरादर होने के योग्य तो ठहरे"(प्रेरित ५:४१)

जब हम इस योग्य पाये जाते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के लिए लज्जित किये जाएँ तो निराश और निरुत्साहित होने के स्थान पर हमें आनन्दित होना चाहिए, क्योंकि इस तरह से हम उसकी महिमा को नये प्रकार से देखते है, और उस आनन्द में हम एक नया और आश्चर्यजनक बल पाते है। उनके नाम के लिए लज्जा उठाने के द्वारा हम ऊँची जिम्मेदारी की उनकी सेवा व आदर करने के लिए उन्नति पाते है। "यदि मसीह के नाम के लिए तुम्हारी निन्दा की जाती है तो धन्य हो।" (१ पतरस ४:१४)।

कल्पना कीजिए कि आप किसी कार्यालय में एक साधारण लिपिक का कार्य कर रहे थे, और एक दिन अचानक आपकी उन्नति विभाग के प्रमुख के पद पर हो गई, तो क्या आप घर जा कर पत्नी के सामने रोने लगेंगे ? जी नहीं, आप आनन्द मनाएँगे कि आप ऐसी जिम्मेदारी के लिए योग्य गिने गये और उन्नति के लिए योग्यता प्राप्त कर ली थी। तब आप आनन्द मनाइये कि 'उनके' लिए निन्दा सहने की ईश्वरीय जिम्मेदारी दिये जाने के लिए आप योग्य गिने गये। यही वास्तविक उन्नति है। जैसे-जैसे आप अपने विशेषाधिकार का अनुभव करने लगते है आप बलवन्त बनेंगे।

प्रभु करें, हम में से प्रत्येक प्रभु के आनन्द में जो हमारे बल है प्रवेश करना सीख जाएँ।

२. मुफ्त आनन्द

"परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं, परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है।"

(रोमियों १४:१७)

सांसारिक आनन्द संपत्ति से उत्पन्न होता है। मनुष्य सोचते है कि यदि जो कुछ वे पाना चाहते हैं सब प्राप्त कर लें तो वे सुखी होंगे। इसलिए वे उसे प्राप्त करने के लिए चल पड़ते है और अपना पूरा जीवन ऐसा करते हुए व्यतीत कर देते है, पर अन्त में निराशा मात्र मिलती है।

इस विश्व के समस्त खजाने आपकी पहुँच के अन्दर हो सकते है, फिर भी आप दयनीय और दु:खी बने रह सकते है। इतना ही नहीं, यदि कुछ समय के लिए आप सुखी भी दिखाई पडे, यह सुख स्थायी नहीं हो सकता। कुछ समय में आपकी सम्पत्ति आपके हाथों से निकल जाती है। देर से या जल्द ही जीवन निरुत्साह लाता है, और आशाएँ छिन्न-भिन्न हो जाती है। आपका स्वास्थ्य गिर जाता है। समस्त विश्व की प्रत्येक वस्तु जिसमें आपने आनन्द ढूँढा, अन्त में आपको निरुत्साहित करती है।

आज का मीठा कल कडुआ बन जाएगा; आज जो मित्र है कल शत्रु बन जाएगा; आज की बुद्धिमता कल मूर्खता बन जाएगी? सब कुछ जो आप सोचते हैं कि आपको आनन्द देगा, अन्त में खाली सिद्ध होगा। प्रभु यीशु मसीह जीवते, प्रेमी, उद्धारकर्ता, जो पापियों के लिए मरे, वे ही अकेले हैं, जो आपको आनन्द दे सकते है। परन्तु जो आनन्द वे आपको देते हैं वह सांसारिक नहीं। वह उनका स्वयं का स्वर्गीय आनन्द है।

"परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है"। (रोमियों १४:१७)।

पवित्र आत्मा जो हमारे अन्दर रहने के लिए आता हे, हम में परमेश्वर के वरदान के रुप में धार्मिकता को बहुतायत से उत्पन्न करता है और वही धार्मिकता हमारी शान्ति और आनन्द का मूल है। मानवीय धार्मिकता अपने साथ शान्ति या आनन्द नहीं लाती, क्योंकि वह प्रयत्नों पर आधारित है। परमेश्वर और मनुष्यों के सामने धर्मी बनने के लिए मनुष्य कठिन संघर्ष करते है, परन्तु अपने समस्त संघर्ष में वे परमेश्वर की दृष्टि में प्रति दिन और भी मलिन बनते जाते है। जिसे मनुष्य धार्मिकता कहते हैं, परमेश्वर उसे मैले चिथड़े कहता है (यशायाह ६४:६)। "वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए" (रोमियो १०:३)। यही कारण है कि चाहे वह यहूदी धार्मिकता हो, या हिन्दू धार्मिकता, बौद्ध धार्मिकता हो या "नामधारी मसीही" धार्मिकता हो, परमेश्वर उसे मैले चिथड़े कहता है।

और जिन छलपूर्ण कार्यो को आप करते हैं उनके बारे में क्या? आपके पास कई उत्तम प्रमाण पत्र हो सकते है। आपके प्रधान अध्यापक या प्राचार्य ने लिखा हो: अमुक व्यक्ति का नैतिक चरित्र बहुत उच्च है। परन्तु आप जानते है कि अक्सर यह सिर्फ एक झूठ होता है। शिक्षक और विद्यार्थी सभी यह जानते हैं। आपकी समिति के सदस्य, आपके पड़ोसी, मित्र और संबंधी सब यह बता सकते हैं आप कितने भले व्यक्ति है। आप भले ही यह जानते हों कि उत्तम प्रमाण पत्र किसी भी देश के किसी भी नियुक्तिकर्ता या पास्टर या प्रचारक से कैसे प्राप्त करें: परन्तु परमेश्वर आपके बारे में क्या सोचता है – पवित्र परमेश्वर जो भस्म करने वाली आग है उसके सामने आपके प्रमाण पत्र कैसे दिखाई

पड़ेंगे ? क्या आपका अपना विवेक स्वयं प्रतिदिन आपको नहीं बताता कि आप दोषी है, दोषी हैं, दोषी है ? आपके बारे में दूसरों की भली राय न सुनिये। अपने स्वयं के विवेक की आवाज सुनिये, और आपको वह बाते दिखाई जाएँगी जो अपने गुप्त रुप से, सम्भव है वर्षो पहले, किसी कोने में या कमरे में या किसी पेड़ के नीचे की है। जब आप सोने जाते है तो किस प्रकार के विचार आपके मन में आते हैं ? या, जब आप इधर-उधर चल रहे हाते है आपको यह आवश्यकता नहीं कि दूसरे बताएँ कि आप क्या हैं। अपने विवेक की आवाज सुनना सीखिए, और जो वह आपसे कहता है उस पर विश्वास कीजिए। अब और अधिक समय अपनी स्वयं की धार्मिकता स्थापित करने के प्रयत्न में नष्ट न कीजिए।

परमेश्वर अपने प्रेम के मुफ्त वरदान के रुप में अपनी धार्मिकता आपको देने के लिए तैयार है। क्या आपके पिता या माता, भाई या बहन, पति या पत्नी आपको ऐसा प्रेम दे सकते है ? यद्यपि कि वे प्रयत्न करते है, तौभी वे ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि ऐसा प्रेम देने में वे समर्थ नहीं है। फिर भी अनन्तकाल का परमेश्वर आपकी ऐसा प्रेम देना चाहता है। वह प्रेम में शान्ति जोड़ देता है, और उसको ऐसा प्रेम देना चाहता है। वह प्रेम में शांति जोड़ देता हे, और उसको अनन्त काल से गुणा करता है। यह उसका अनुग्रह है। और उस प्रेम और शांति में वह पवित्र आत्मा का आनन्द जोड़ देता है। मनुष्य न तो वह आनन्द आपको दे सकता है और न मानवीय प्रयत्नों से आप उसे स्वीकार ही कर सकते हैं, परन्तु यदि आप परमेश्वर ही की धार्मिकता से धर्मी बन जाएँगे, और इसके फलस्वरुप आप प्रभु में आनन्दित होने लगेंगे। आप परमेश्वर के आनन्द से उछल पड़ेगे, आपके हृदय में आत्मा के आश्वासन के कारण कि आप परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हैं और इसलिए भी कि दिन प्रति दिन आप अपने आपकी प्रभु में और भी अधिक धनी और शुद्ध और बलवन्त बनता पाएँगे।

इस विषय पर मैं और कुछ देर रुकूँगा। मैं चाहता हूँ कि हम परमेश्वर के वचन से देख लें कि कैसे उसने सम्भव बनाया कि प्रत्येक व्यक्ति इस आनन्द का अनुभव कर सके।

“जंगल और निर्जल प्रफुल्लित होंगे, मरुभूमि मगन हो कर केसर की नाई फूलेगी, वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जय-जयकार करेगी। उसकी शोभा लबानोन की सी होगी और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी। वे यहोबा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे।” (यशा. ३४ १-२)

कितने सरल रुप में और सुन्दरता पूर्वक प्रभु अपने आनन्द को कुछ शब्दों में वर्णन करता है। जब एक मनुष्य की अनाज्ञाकारिता से पाप संसार में आया, वह अपने साथ एक शाप ले आया; और शाप के कारण हर स्थान पर कांटे और ऊँटकटारे, निष्फलता और निरुत्साह हैं। ये पाप में गिरे मनुष्य के हृदय और जीवन का चित्र हैं। अपनी स्वयं की प्रगति और संस्कृति से मनुष्य जो कुछ भी करना चाहे, उसका अन्त सिर्फ कांटों और मरुस्थल की रेत में होता है।

पृथ्वी पर कई राज्य और साम्राज्य हुए, और सभी का अन्त असफलता पराजय और लज्जा में हुआ। वे सब प्रसिद्ध राजा और दार्शनिक अब कहाँ है जो एक समय उनकी सम्पत्ति और बुद्धिमत्ता के विषय घमंड से बोलते थे? अवश्य है कि मनुष्य के प्रत्येक कार्य का अन्त शून्यता में हो। सुन्दर भवनों का अन्त भी यद्यपि कि पत्थर से बने हो, खंडहर के ढेरों में होता है। कुशलता से तैयार किए गए इंजन और यंत्र भी एक दिन टूट ही जाते हैं। मानवीय संबंधो का अन्त विरोध, कडुवाहट और घृणा में होता है। बच्चे माता-पिता के विरुद्ध विद्रोह करते है। संबंधियों को जो दया दिखाई गई, उसके बदले वे

अधन्यवादी बन जाते है। प्रत्येक घर में काँटे और ऊँटकटारे होते है। क्या आप मुझे कोई भी ऐसा घर बता सकते हैं जहाँ भाई और बहिन, और सास और बहु के बीच विरोध या कलह या घृणा या ईर्ष्या नहीं है? क्या आप मुझे कोई ऐसा देश बता सकते है जहाँ भ्रष्टाचार या अनैतिक नहीं है? यहाँ तक कि ऊँचे पद के मनुष्य भी रिश्वत लेते और देते हैं। प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक देश में पाप और शाप के चिन्ह दिखाई देते है।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरुप में बनाया। उसने पहिले मनुष्य को एक आश्चर्यजनक देह दी, जो हर बात में सम्पूर्ण निर्दोष थी। तब पाप आया, और अब प्रत्येक मुख पर पाप के चिन्ह देख सकते है। कुछ समय के लिए कुछ चेहरे बहुत सुन्दर और प्रिय दिखाई पड़ते है, पर गुप्त जीवन को ध्यान से देखिए और आप घमण्ड, लोभ, व्यर्थता और लालसा के पाप के चिन्ह देखेंगे। इस तरह परमेश्वर की आँखों में मनुष्य का जीवन सीर्फ रेत, कांटों और ऊँटकटारों और निष्फलता से भरे एक मरुस्थल के सिवाय कुछ नहीं।

हे मनुष्य! इससे पहले कि तुम स्वयं पर या अपने कार्यो पर घमंड करो, जिस तरह परमेश्वर तुम्हें देखता है। उसी तरह अपने आप को देखना सीखो – कि तुम्हारा जीवन एक ऐसे व्यर्थ मरुस्थल के सिवाय कुछ नहीं जो किसी भी मनुष्य के द्वारा न बदला जा सकता है, न सुधारा जा सकता है। फिर देखो, परमेश्वर का वचन क्या कहता है: "मरुभूमि मगन होकर केसर की नाई फूलेगी; वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जय-जयकार करेगी।" यह परमेश्वर के अनुग्रह का आश्चर्य कर्म है। वह केवल उस पाप को ही क्षमा करने की तैयार नहीं जो हमारे जीवन में समस्त बंजरपन और निष्फलता उत्पन्न करता है। परन्तु 'उसके' प्रेम के द्वारा उस बंजर और फलविहीन जीवन को गुलाब के बगीचे में परिवर्तित करने को तैयार है।

“और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौट कर जय-जयकार करते हुए सिय्योन में आएँगे; और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा, वे हर्ष और आनन्द पाएँगे और शोक और लंबी सांस का लेोना जाता रहेगा।” (यशा. ३५:१०)

जब आप पहिली बार इस नये जन्म के अनुभव में आते है तो आप निश्चय कहेंगे: “काश! कि मेरा नया जन्म ५, १०, २० साल पहिले हुआ होता।” एक मसीही के रुप में मेरे नये जीवन के आरंभ मे मैंने यही बात कही। मैंने कहा, “यदि १० साल पहिले ही मेरा नया जन्म हो गया होता तो मैंने अपना जीवन बिगाड़ा होता और न इतने बहुमूल्य वर्ष व्यर्थ गंवाए होते।” कितनी बार मैंने उन वर्षों के लिए लम्बी सांसे ली हैं, जो मैंने लज्जा और अन्धकार में व्यतीत किए। क्या आपन कभी इस प्रकार से विचार किया है? आप कितने भी वृद्ध या जवान क्यों न हों नि:संन्देह आपको यह विचार आया है। यदि ऐसा ही है, तो हम आपको शुभ समाचार दे सकते है। जब हम परमेश्वर के अनुग्रह को उसकी सम्पूर्णता में ग्रहण करते हैं जब प्रत्येक पिछली हानि का दुगुनी क्षतिपूर्ति हो सकती है। “जिन वर्षों की उपज ...टिड्डियों ने ... खा ली थी मैं उसकी हानि तुम को भर दूँगा” (योएल २:२५)। यदि आप किसान हैं तो आप जानेंगे कि किस प्रकार पौधों को टिड्डियाँ, इल्ली, फफूँद और ताल कृमि नष्ट करते है। आज खेत सुन्दर और हरा दिख सकता है, पर टिड्डियाँ आ सकती हैं और सब पत्तियों को खा सकती है। उनके बाद आते हैं, इल्ली, फफूँद और ताल कृमि। ऐसे खेत के लिए क्या आशा है?

क्या यह आपके जीवन का चित्र है? कि अंधेपन और मूर्खता के कारण आपकी तरुणावस्था के दस वर्ष टिड्डियों द्वारा खा लिए गए; आपके घमण्ड और स्वेच्छा के कारण आपकी युवावस्था के दस वर्ष इल्ली द्वारा खा लिए गये; आपके क्रोधपूर्ण स्वभाव और अनुशासन विहीनता के कारण आपकी अधेड़ावस्था के दस वर्ष फफूँद के द्वारा खा लिए

गये; आपके हठीलेपन और हृदय की कठोरता के कारण आपकी वृद्धावस्था के दस वर्ष ताल कृमि के द्वारा खा लिए गए। आपका हृदय यहाँ तक और भी कठोर से कठोर होता जाता है कि जब अपनी मृत्युशैया पर आप पीछे की और देखते है और अपनी पत्नी या पति या बच्चों या पड़ोसियों को आपकी खाट के चहुँ ओर इकट्ठा होकर आँसू बहाते देखते है, आप वस्तुओं को ऐसा देखते है जैसा पहले कभी नहीं देखा था, और हृदय के दर्द के साथ आप अपने बच्चों से कहते गए।" और अपने पड़ोसियों से कहते है 'मेरी युवावस्था के दस वर्ष इल्ली द्वारा खा लिए गए।' फिर आप अपनी मूर्खता को जान जानेंगे जिसके बारे में अभी आप घमण्ड से बोलते हैं। तब आप अपने हठीलेपन को मान लेंगे जिसके द्वारा अभी आप सत्य का तिरस्कार करते हैं। परन्तु उस समय बहुत देर हो चुकी होगी। सत्य का तिरस्कार करते हैं। परन्तु उस समय बहुत देर हो चुकी होगी।

अब आप परमेश्वर के अनुग्रह का आश्चर्य कर्म देखिए। यद्यपि कि आपका जीवन इस प्रकार से नष्ट किया जा चुका है और एक मरुस्थल बनाया जा चुका है, तब भी आपका प्रभु कहता है: वह समस्त जो दूर किया जा चुका है "मैं वापस लाऊँगा"। कैसा अदभुत आनन्द है जो वह देता है। वह समस्त जो नष्ट किया जा चुका है, बिगाड़ा और खोया जा चुका है वापस लाया जा सकता है, और फिर से क्षति पूर्ति की जा सकती है। यहूदी राष्ट्र एक मरुस्थल बन चुका था। उसके लोग अंधेपन के दास थे, पाप के कारण बिखरे हुए थे। फिर भी परमेश्वर ने उन्हें वापस लाने की और पृथ्वी पर का राज्य उन्हें फिर से देने की प्रतिज्ञा की। प्रभु यीशु मसीह में वह हमें कितना अधिक देताहै। यही हमारा आनन्द है। इसीलिए हम अधिकाधिक आनन्द मानते हैं क्योंकि जो कुछ हमने खो दिया है, वह परमेश्वर के अनुग्रह से वापस लौटा लाया जा सकता है। जब एक छोटी सी वस्तु भी खो जाती है और फिर से मिल जाती है तो हमें कितना बड़ा आनन्द होता है; तब और भी

कितना बढ़कर हमें आनन्द होगा जब परमेश्वर नष्ट हुए वर्षों की समस्त हानि को हमें वापस लौटा देगा।

आइये; हम अनुमान लगाने का प्रयत्न करें कि हम सभों ने कित ने वर्ष नष्ट किए है। उदाहरण के रुप में, आइये हम एक पवित्र सभा में भाग लेने वालों को लें। इन सभाओं मे औसतन २००० लोग उपस्थित होते है। यदि प्रत्येक ने २५ वर्ष खो दिए, तो कुल हानि बहुमूल्य जीवन के वे ५०,००० वर्ष होगी, जो अन्धकार में खो दिए गए और नष्ट कर दिए गए।

एक दूसरा सरल उदाहरण लीजिए। स्कूल में या ट्राम या बस में या किसी दूसरे स्थान में वे समस्त वस्तुएँ जो आपने अपने जीवन काल में खो दी हैं उन्हें याद करने का प्रयत्न कीजिए। कितने कलम, पेन्सिलें, अभ्यास पुस्तिकाएँ, चप्पलें, कितनी चाबियाँ, दर्पण, नकली दाँत, कितने कपड़े धोबी के द्वारा खो दिए गये या फाड़ दिए गए, कितना धन चतुर बनियों और साहूकारों के कारण खोना पड़ा, और भी कितनी दूसरी वस्तुएँ। कल्पना कीजिए कि जब इस संध्या घर जाएँ तो आप इन समस्त वस्तओं को वापस घर लौट आई पाएँ। क्या यह आपको आनन्द नहीं देगा? जो कुछ आपने स्कूल में मेट्रिक में और इन्टर और उपाधि में अनुत्तीर्ण होने से खोया है उसके बारे में सोचिए। अब कल्पना कीजिए कि आपको बताया जाये कि पहले जहाँ भी अनुत्तीर्ण हुए थे उनके लिए आपको पूर्ण उपाधि दी जा रही है। क्या यह आपको बड़ा आनन्द नहीं देगा?

तथापि यहाँ हमारे पास बहुत अधिक अदभुत और महिमायुक्त समाचार है। परमेश्वर के अुनग्रह के आश्चर्य कर्म के द्वारा पाप और पराजय के समस्त वर्ष आपको वापस दिए जा सकते है। सिर्फ इतना ही नहीं, परन्तु जितना आपने खोया है उससे अधिक बढ़ कर आपको वापस दिया जाता है। इसलिए बीते समय की असफलताओं और लज्जा

के कार्यों के लिए अब आगे से लम्बी साँस न लें। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।" हम सब काँटों और उंटकटारों और रेत के मरुस्थल के समान बन गए है। परन्तु जो कुछ हमने अपने अन्धेपन, दुर्बलता, मूर्खता और अज्ञानता के कारण खो दिया है वह हमारे प्रभु के द्वारा जिस पर हमने विश्वास किया है हमें वापस कर दिया जाएगा। तब प्रभु को पूर्ण रुप से ग्रहण करें। उस आनन्द को ग्रहण करें, जिसे वह सम्पूर्णता में, इतने प्रेम से और मुफ्त में आपको देना चाहता है। उसका सिर्फ एक भाग ही आप ग्रहण न करें। वह हमें सब कुछ देता है, और उत्तर में सब कुछ माँगता है। अपने प्रभु को अपना समस्त प्रेम सम्पूर्णता से और स्वतंत्रतापूर्वक लेने दीजिए। तब अपने हृदय में आनन्द और हर्ष और गीत होगा, और प्रभु का आनन्द आपका बल होगा। उसे ग्रहण करने के लिए प्रभु आपकी सहायता करें।

३. बढ़ता हुआ आनन्द
“तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है।”
(भजन १६:१०)

जो आनन्द हम नये जन्म के समय प्राप्त करते हैं, वह सांसारिक नहीं है परन्तु स्वयं प्रभु का है। इसलिए उसे कई गुणा बढ़ना चाहिए तथा अनन्त काल तक और अधिक बलवन्त और गहरा और सम्पूर्ण होता जाना चाहिए। साथ ही यह एक स्वार्थी आनन्द नहीं है। यह एक ऐसा आनन्द है जो इस पृथ्वी पर और स्वर्गीय स्थानों में बहुतों द्वारा बांटा नहीं जा सकते। परन्तु यह आनन्द एक स्वर्गीय आनन्द है जिससे इस पृथ्वी पर दूसरे लोगों को परिचित और उनसे बांटना हमारा विशेषाधिकार है।

अब हम पुराने नियम के एक उदाहरण को लेंगे। हम दाऊद के जीवन में छः बहुत ही सरल पदों को देखेंगे। वह क्या था जिसने दाऊद को बड़ आनन्द से आनन्दित करने में समर्थ किया, और किस तरह वह दूसरों को अपने साथ आनन्दित करने में समर्थ हो सका? जब हम उसके इतिहास को पढ़ते हैं हम देखते हैं कि उसके जीवन में ऐसे कई अवसर आए थे, जिसमे से प्रत्येक वह समय हे जब कि दाऊद का अपने प्रभु के ज्ञान का आनन्द, जो कि दाऊद का बल था, प्रगति पाता है। हम आप को यह दर्शाने का प्रयत्न करेंगे कि किस प्रकार आप भी इन अनुभवों को अपने जीवन में प्राप्त कर सकते है।

“तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य में यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा” (१ शमू १६:१३)।

इस अध्याय में हम पढ़ते हैं किस तरह दाऊद राजा होने के लिए चुना गया। उस समय उसका राजा बनने का कोई विचार नहीं था। वह सिर्फ एक चरवाहा बालक था और

अपने पिता के झुण्ड की देखभाल करता था। मैं विश्वास नहीं करता कि यह विचार उसे कभी भी आया होगा कि वह एक दिन इस्त्राएल का राजा होगा, न ही यह विचार उसके माता-पिता के मन में आया होगा, और न शमूएल नबी के ही मन में आया होगा। शमूएल ने तो वास्तव में सोचा था कि एलीआब, जो पहलौठा था वही निश्चय ही परमेश्वर का अभिषिक्त था। फिर भी शमूएल नबी के पास जो परमेश्वर का वचन आया, इसके अनुसार उसने दाऊद को पूरे परिवार के सामने अभिषेक किया।

दाऊद के समान हम में से प्रत्येक व्यक्ति पृथ्वी पर के किसी एक परिवार में जन्मा है; परन्तु क्या आपने कभी जाना है कि परमेश्वर आपको स्वर्गीय राजा बनाना चाहता है? सन्देह नहीं कि आप परमेश्वर की दया में विश्वास रखते हैं, क्योंकि उसने आपके पाप क्षमा कर दिए है, परन्तु क्या आपने कभी यह स्वप्न देखा है कि आपके परमेश्वर और सृष्टिकर्ता का आपके लिए ऐसा उन्नत उद्देश्य था? हम १ पतरस १:६ और प्रकाशित १:६ और ५:१० में पढ़ते हैं कि परमेश्वर का विचार वास्तव में ही ऐसा है। परमेश्वर का वचन पढ़िए और देखिए कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम रखता है और उसने कैसी योजना बनाई है। तब आपको निश्चय ही एक आनन्द का दिन प्राप्त होगा। अपने ऊपर परमेश्वर के हाथ का अनुभव करें, और जाने कि आपके बीते हुए पाप के जीवन के बावजूद भी परमेश्वर चाहता है कि आप एक राजा बनें।

फिर भी जब आप यह अनुभव करने लगते हैं कि परमेश्वर की आत्मा आप पर इस चिन्ह के रुप में उण्डेली जा रही है कि आप सदा के लिए उसके हैं, तो यह सिर्फ आरम्भ ही है। यद्यपि कि नये जन्म का आनन्द इतना अदभुत है फिर भी वह सिर्फ आरम्भ ही है। जब आप उद्धार का वरदान और पवित्र आत्मा की मुहर प्राप्त करते हैं, तब आप यह जानना आरम्भ करेंगे कि आपको बुलाने में और प्रेम करनें में और उद्धार करने में

परमेश्वर का वास्तविक उद्देश्य क्या था। यह जानना कि परमेश्वर ने आप को बुलाया और चुना है, आनन्द का आरम्भ है।

"जब दाऊद उस पलिश्ती को मार कर लौटा आता था, और वे सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्त्राएली नगरों से स्त्रियाँ निकल कर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई शाउल राजा के स्वागत में निकली। और वे स्त्रियाँ नाचती हुई एक दूसरे के साथ यह गाती गई, कि शाउल ने तो हजारों को परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है" (१ शमू. १८:६, ७)।

दाऊद गोलियात के सामने आया और उसे मार डाला। यह एक और आनन्द का दिन था। वह बड़ा राक्षस जिसने पूरे इस्त्राएल को कंपा दिया था, दाऊद नाम लड़के के द्वारा मार डाला गया था। वह उस दिन कितने गर्व और आनन्द से भरा होगा।

हम में से अधिकांश को अपने जीवन में कई गोलियातों का सामना करना पड़ता है। क्या आपको याद नहीं कई बार जब शैतान राक्षस के समान आपके जीवन में आया? क्या आपको वे दिन और समय याद नहीं जब आप उसकी कुयुक्तियों के द्वारा लगभग हरा दिए गए थे? यदि शैतान हमारे प्रभु के पास उसकी परीक्षा करने के लिए आया था (मत्ती ४) तो वह किसी विश्वासी को भी छोड़ने वाला नहीं है। परन्तु हम यह भी याद रख सकते हैं कि किस तरह बाइबल में से एक वचन ध्यान में लाने के द्वारा, हमने उसी गोलियात को हारते और लज्जित होते देखा है। मुझे निश्चित है कि हम में से कई ऐसे समयों को याद कर सकते है कि कैसे सामर्थी प्रभु यीशु ने हमारे अन्दर निवास करते हुये एक नहीं कई गोलियातों पर विजय प्राप्त की है। संदेह नही ऐसे अवसरों पर हमें आनंदित होने का कारण था जब हम जयवन्त निकल आये। परन्तु आगे जो कुछ है उससे इन आनन्द की भी तुलना

नहीं की जा सकती। बुराई पर विजय का आनन्द बड़ा हाता है परन्तु आपके परमेश्वर के पास इससे भी बढ़कर आनन्द आपके लिए है।

"और जो कुछ अमालेकी ले गये थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छूड़ा लिया। वरन उनके क्या छोटे क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियाँ, क्या लूट का मला, सब कुछ जो अमालेकी ले गये थे उसमें कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो, क्योंकि दाऊद सब का सब लौआ लाया" (१ शमू. ३०:१८ , १९)।

दाऊद आँसू बहाता और रोता था, क्योंकि अमालेकी आये और स्त्रियों और बच्चों को ले गये और सिकलग को जला दिया था। उसके मित्र और सिपाही और साथी तो दाऊद पर पत्थरवाह तक करने की सोचने लगे, क्योंकि उन्होंने देखा कि उनकी स्त्रियों और बच्चे बन्धुआई में चले गये थे और उनके घर जला दिये गये थे। यह सब दाऊद की एक गलती के कारण हुआ था जब वह, जैसा कि हम २९ वें अध्याय में पढ़ते है, अपने पुराने शत्रु से लड़ने क लिए पलिश्तियों से मिल गया था। जब वह वापस आया तो उसने शहर को जला हुआ पाया।

जब हम परमेश्वर को असफल कर देते हैं, और उसके इच्छा के विरुध्द कार्य करते हैं हमें निश्चय दु:ख उठाना ही पड़ता है। परन्तु ३० वें अध्याय में दाऊद फिर अपने आपे में आया। उसने मन फिराया और प्रभु की सलाह ली। फलस्वरुप, हम १९ वें वचन में पढ़ते है कि "दाऊद सबका सब लौआ लाया"। यद्यपि कि वहाँ पर कोई आशा नहीं दिखती थी, फिर भी वे अपनी सब स्त्रियाँ, बच्चे और सम्पत्तियाँ प्राप्त करने में समर्थ किये गये, और उनके मित्रों की भेंट देने के लिए भी पर्याप्त मिल गया था। वह दाऊद के जीवन

में बड़े आनन्द का दिन था, जब वह उसके प्रेमी परमेश्वर द्वारा क्षमा कर दिया गया था और जब वह शत्रु से जितना कुछ वह ले गया था उससे कहीं अधिक वापस लौटा लाया।

दाऊद के समान हम कई गलतियाँ करते है। यद्यपि कि हम नया जन्म पा चुके है, और उसका प्रेम चखते रहे हैं, और किस तरह उसकी इच्छा खोज निकालें यह भी सीख लिया है, फिर भी हम परमेश्वर की इच्दा खोजने में असफल हो जाते हैं और इसके स्थान पर अपनी ही बुद्धि से कार्य करते हैं। इस समय क्या आप दाऊद के समान, इसी प्रकार की किसी मूर्खता पर आँसू बहा रहे है? आप जानते हैं कि उसकी इच्छा न खोजने से आप भटक गए, और इसीलिए आपके मित्र भी आपकें विरुध्द हो गए हैं।

"और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे बेटियों के कारण बहुत शोकित हो कर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण कर के हियाव बान्धा" (१ शमू. ३०:६)।

दाऊद के मित्रों ने उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा की। सो इसी तरह, जब आप गलत काम कर जाते हैं तो सम्भव है कि जो आप के मित्र होना चाहिए वे भी बदल कर आप के विरुद्ध हो जाएँ। परन्तु आपके प्रभु के पास वापस आने के द्वारा और उसकी इच्छा पूरी करने के द्वारा, आप धोए जाते हैं और क्षमा किये जाते और ढाँपे जाते हैं। इस तरह आप आनन्द मना सकते है कि परमेश्वर ने आपकी मूर्खता को क्षमा कर दिया है और यह कि आप उसके द्वारा पुन: उपयोग किये जा सकते है; और पुन: प्राप्त की गई सहभागिता और प्रार्थना के उत्तर से आपका हृदय महान आनन्द से भर जाएगा।

"तौभी दाऊद ने सिय्योन नामक गढ़ को ले लिया वही दाऊदपुर भी कहलाता है और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा, और उसका नाम दाऊद नगर रखा" (२ शमू. ५७, ९अ)।

जिस दिन दाऊद ने सिय्योन पर विजय प्राप्त की वह आनन्द मनाने का दूसरा अवसर था। यहोशू यबूसियों को सिय्योन से बाहर भगाने में असफल हो गया था। ये दाऊद का ठट्टा करने लगे, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह और बल के द्वारा उसने उन्हें बाहर भगा दिया। जी हाँ, जिस दिन उसने ऐसा किया वह उसके लिए आनन्द का दिन था, क्योंकि उस समय वह उसकी चुनने में परमेश्वर के उद्देश्य को और अधिक समझने लगा। उसने परमेश्वर की अपने लोगों के लिए स्वर्गीय योजना को कुछ-कुछ समझना आरम्भ किया, और यह भी किस तरह यह योजना तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक यबूसी यरूशलेम में बने रहते हैं।

परमेश्वर, जिसने मिश्र पर दस विपत्तियाँ भेजी थीं और यरीहो की दीवारों को गिरा दिया था, अब कनान देश से सात जातियों को बाहर निकालने के लिए अपनी प्रजा पर आधारित हुआ था।

यह स्वर्गीय योजना का भाग कि सिर्फ परमेश्वर की प्रजा के द्वारा, जो मिश्र से निकल कर आई थी, वे बाहर भगाए जाएँ। परमेश्वर के पास सामर्थ थी कि यदि वह चाहता तो इन लोगों को भस्म करने के लिए और उनका न्याय करने के लिए स्वर्ग से आग भेज सकता था। जो कुछ उसने यरीहों में किया, क्या यबूसी गढ़ में वही नहीं कर सकता था? परन्तु परमेश्वर ऐसे माध्यमों को प्रयोग करने का अभिप्राय नहीं रखता था। उसने अपनी प्रजा को न्याय में अपनी सहकर्मी और सहयोगी होने के लिए चुन लिया था।

क्या आप पूरी रीति से जान गये हैं कि परमेश्वर अपनी स्वर्गीय योजना को पूर्ण करने के लिए आप पर अर्थात् अपनी प्रजा पर आधारित है? परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और "यबूसियों" को अपने मध्य में से काट डालने के स्थान पर हम उनसे विवाह कर लेते हैं, और उन्हे अपने मध्य में रहने की अनुमति दे देते है। और इसी कारण इतनी संख्या में अपरिवर्तित मनुष्य पास्टर, प्राचीन, समिति के सदस्य और यहाँ तक कि अध्यक्ष

(बिशप) भी बन गये है। नया जन्म पाई हुई कितनी महिलाएँ हैं जिन्होंने धन, या शिक्षा, या रंग, या ऊँचाई के कारण “यबूसियों” से विवाह कर लिया है। या कितने नया जन्म पाये हुए मनुष्य हैं जिन्होंने कुछ हजार रुपयों के दहेज के लिए “यबूसी” स्त्री से विवाह कर लिया है। इसी कारण आप परमेश्वर के लोगों के मध्य निष्फलता और एक श्राप को पात है। लगभग चार सौ वर्षो तक परमेश्वर के उद्देश्य को ऐसे यबूसियों के कारण बाधा पहूँचती रही। उन्हे पूर्ण रीती से बाहर भगाना ही था। उन ज्ञान के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो इस अवसर पर उसने दाऊद को दिया।

हमें बताया गया है कि उसने सिय्योन को जीत लिया और उस दिन से उसने उसे दाऊद नगर कहा। “और दाऊद बढ़ता गया और महान हो गया और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके साथ था” (१० वाँ वचन)। फिर भी उसका आनन्द अभी तक पूर्ण नहीं था।

जब विश्वासी अनात्मिक मनुष्यों के साथ समझौता करने को या जो नया जन्म नहीं पाये हैं उनके साथ संयुक्त होना अस्वीकार कर देते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि उन्होंने यह समझना आरम्भ कर दिया है कि परमेश्वर के उद्देश्य में बाधा पहुँचाने के लिए ऐसे यबूसियों ने क्या किया है। सब विश्वासियों के लिए वह आनन्द का दिन होता है जब वे समझ जाते है कि उन्हें सब कुछ से जो संसार का और पुराने जीवन का है अलग होना है, और जब वे यह भी जान जाते है कि परमेश्वर अपनी स्वर्गीय योजना की पूर्ण करने के लिए उन पर आधारित है। फिर भी जैसा कि हम देखेंगे इस बात का पता लगजाना भी केवल आरम्भ ही है।

“सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चाँदी के पचास शेकेल में मोल लिया, और दाऊद ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनवा कर होम बलि और मेल बलि चढ़ाए।

और यहोबा ने देश के निमित्त विनती सुन ली, तब वह व्याधि इस्त्राएल पर से दूर हो गई (२ शमू. २४:२४ ब, २५)

दाऊद के इतिहास में एक और आनन्द का दिन था जब परमेश्वर उसे यबूसी अर्नोन के खलिहान मे ले आया। उस पर उन लोगों को गिनने का प्रलोभन आया था, और यद्यपि कि परमेश्वर उसके लिए युद्ध करने में आश्चर्य कर्म दिखाता रहा था, उसने अपने शूरवीरों को गिनना आरम्भ कर दिया, मानों उसका बल उन्हीं पर और उसकी सेना की विशालता पर आधारित था। इसलिए परमेश्वर को उसे दण्ड देना पड़ा, और उसने यबूसी अर्नोन के खलिहान में पश्चाताप किया।

वह एक बहूत दु:खदायी पाप था, परन्तु परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया था, और इसलिए वह दाऊद के जीवन में इतने आनन्द का दिन था। क्या वह आपके जीवन में बड़े आनन्द का दिन नहीं होता, जब परमेश्वर अन्धेपन से उसकी इच्छा पूरी न करने के किसी दु:खदायी पाप को क्षमा कर देता है। ओह, कैसा अनुग्रह भरा और दयालु हमारा परमेश्वर है! उसकी कोमल दया कितनी महान है; क्योंकि यद्यपि हम उसे इतने दु:खदायी रुप से असफल कर देते है फिर भी वह हमे क्षमा करने को तैयार है।

वह दाऊद के लिए एक आनन्द का दिन था, और वही परमेश्वर हम सभों को उसी प्रकार के आनन्द के दिन देता है। वही स्थान जहाँ पर दाऊद को दण्ड दिया गया था परमेश्वर के भवन का निर्माण स्थान बना। “तब सुलैमान ने उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन पाकर यबूसी अर्नोन के खलिहान में तैयार किया था” (२ इति० २:१)। उस दिन ने दाऊद का सच्चाई आनन्द आरम्भ हुआ। उसे कई आनन्द पूर्ण दिन मिले थे, ओर अदभुत दिन भी, परन्तु जो आनन्द उसने वेदी के

निकट परमेश्वर के मन्दिर के निर्माण स्थल पर पाया था उसकी तुलना में वे दिन कुछ भी नहीं थे।

"अब चौकस रह, यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने के लिए चुन लिया है, जो पवित्र स्थान ठहरेगा, हियाब बान्ध कर इस काम में लग जा। तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों, अटारियों, भीतर कोठरियों और प्रायश्चित के ढकने के स्थान का नमूना ... दे दिया और दाऊद ने कहा यहा सब प्रभु ने अपना हाथ मुझ पर रखने के द्वारा, इस नमूने के सब कार्यो को भी मुझे समझा दिया" (१ इति. २८:१०, ११, १९)।

अब परमेश्वर दाऊद को अपने मन्दिर का नमूना दे सकता था और यह आश्वासन भी कि उसे बनाने के लिए परमेश्वर के द्वारा उसका पुत्र चुन लिया गया था। जो आनन्द दाऊद ने अब अनुभव किया था वह एक सम्पूर्ण नये प्रकार का आनन्द था। यह वह आनन्द था जो परमेश्वर के भवन के लिए स्वर्गीय योजना के प्रगटीकरण के साथ आता है। राजा ने आनन्द मनाया और प्रजा ने भी आनन्द मनाया। फिर भी जैसा इस समय दाऊद ने आनन्द मनाया वैसा आनन्द वह उन सभी दूसरो अनुभवों में से होकर जाए बिना, प्राप्त नहीं कर सकता था। प्रत्येक स्थिति से जान आवश्यक था। हम चाहते है कि आप भी इस आनन्द के अन्तिम अनुभव तक आ जाएँ।

प्रभु का आनन्द आपका बल है। परन्तु स्वर्गीय नमूने के प्रगटीकरण और यह जानने का आनन्द कि परमेश्वर ने हमें उसमें भाग लेने के लिए बुलाया है, हर उस आनन्द से कही बढ़ कर होता है जो कि अपने दूसरो अवसरों पर अनुभव किया हो। इस आनन्द में आप परमेश्वर की योजना और उद्देश्य में प्रवेश करते हैं जो उसने अपनी प्रजा के लिए अभी और आने वाले युगों के लिए बनाई है। तब आप प्रार्थना करें कि प्रभु आनन्द से उत्तरोत्तर

आनन्द तक अपकी ऐसी ही अगुवाई करता रहे, जब तक आप प्रभु के उस आनन्द की सम्पूर्णता तक न पहुँच जाएँ जो आपका बल है।

४. सीखने में आनन्द

परमेश्वर का मार्ग सिद्ध है।
(भजन १८:३०)

सांसारिक वस्तुओं के लिए हमें सांसारिक बुद्धि की आवश्यकता होती है परन्तु आत्मिक वस्तुओं के लिए हमें आत्मिक बुद्धि की आवश्यकता होती है। हम देखते है कि परमेश्वर की प्रत्येक वस्तु सिद्ध और क्रमबद्ध है। उसका मार्ग सिद्ध है। जो कुछ परमेश्वर करता है वह सिद्ध, पूरा और सम्पूर्ण और पवित्र है, और वह आपको और मुझे भी एक सिद्ध मार्ग में लाना चाहता है, जैसी उसने उसी भजन के ३२ वें वचन में प्रतिज्ञा की है: “वह मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।” हम देखेंगे कि कैसे उसके ईश्वरीय निमय हमारे आनन्द को पूरा और सम्पूर्ण बनाएँगे।

परमेश्वर सदा आरम्भ से अन्त को देखता है। चाहे जो कुछ भी वह वर्तमान में कर रहा हो, वह अपनी आँखों को अन्त पर भी रखें हुए है – “मैं तो अन्त की बात को आदि से बताता आया हूँ” (यशा. ४६:१०)। वह ऐसी बात है जिसे हम मनुष्य लोग सरलता से नहीं समझ सकते, परन्तु यदि हम धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करें, परमेश्वर स्वयं हमें सिखाएगा। इस तरह से परमेश्वर के द्वारा हमें सिखाए जाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। इस अध्याय में, इस बात को दाऊद के जीवन से लिए उदाहरणों के द्वारा हम समझाने का प्रयत्न करेंगे।

जिस समय से परमेश्वर ने दाऊद को बुलाया ‘उसके’ पास दाऊद के लिए एक बहुत ऊँचा और स्वर्गीय उद्देश्य था, यद्यपि दाऊद कई वर्षों तक इसे जान न सका। हम भी, जब हम पहली बार मन फिराते हुए अपने प्रभु के पास आते हैं, तो यह नहीं जानते कि हमारा उद्धार करने में परमेश्वर के मन में हमारे लिए क्या है। उस समय हम सिर्फ क्षमा

किये जाने, धोये और शुद्ध किये जाने और परमेश्वर के सामने धर्मी बनाये जाने के विषय में चिन्तित रहते हैं, और जब वह अपने स्वयं के मार्ग हमें सिखाना आरम्भ करता है हम उससे प्रश्न करना या उसका प्रतिरोध करना भी आरम्भ कर देते है। परन्तु हम परमेश्वर के वचन से देखे हैं कि विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों के द्वारा परमेश्वर अपना मन हम पर स्पष्ट रुप से और अधिकाधिक प्रगट करना चाहता है। नये जन्म के अनुभव के बाद, जीवन में अनुभव की गई प्रत्येक बात एक गहरा तथा और अधिक स्वर्गीय और अनन्त अर्थ रखने लगती है। हम पाते हैं कि परमेश्वर अपने स्वयं के मार्ग में, अपने मन विचार और योजना के अनुसार हमारी अगुवाई कर रहा है। यद्यपि कि स्वाभाविक रुप से हम अत्यधिक चतुर हों, तो भी हम पायेंगे कि परमेश्वर के मन को सीखाने के लिए हमें बड़े धैर्य से प्रतीक्षा करनी होगी।

आरम्भ से ही दाऊद बुद्धि से पूर्ण था, वह 'बात करने में बुद्धिमान और रुपवान' था। यह उसकी युवावस्था में उसके बारे में कहा गया था। क्योंकि गुप्त स्थानों में जब वह भेड़ों के पीछे चलता और उनकी रखवाली करता था परमेश्वर ने दाऊद को प्रशिक्षण देना आरम्भ कर दिया था। फिर भी परमेश्वर के मन को जानने के लिए उसे कई वर्षो तक बाट देखनी पड़ी। यद्यपि कि अपने नगर या अपने देश के दूसरे जवानों की तुलना में वह बहुत बुद्धिमान था, और यद्यपि कि उसमें प्रत्येक ईर्ष्या करने लायक योग्यताएँ थीं और वह योद्धा था और बुद्धिा, बल और सुन्दरता के सम्पन्न था फिर भी यह दिखाने के लिए परमेश्वर की कई वर्ष लगे कि वह दाऊद से प्रेम करता था और उसे चुन लिया था।

इसी तरह से प्रभु यीशु हम सभीं से व्यवहार करते हैं। हमारे साथ उसके सब व्यवहारों का भेद उसका असीमित प्रेम है। आप चाहे कोई भी हों यद्यपि कि आपने पाप में जीवन बिताया ही और यद्यपि कि आपके जीवन का मार्ग लज्जा पूर्ण रहा हो परमेश्वर

आपसे प्रेम करता है, और चाहता है कि आपको शुद्ध करे और नया बनाए। सम्भव है कि मनुष्य होते हुए हम आपको मुस्कुराने और हाथ मिलाने आदि के द्वारा प्रेम दिखाने में असफल रहे हों, परन्तु हमारी असफलता आप के प्रति परमेश्वर के प्रेम को बदल नहीं सकती। हम आपको परमेश्वर के वचन से बताते हैं और परमेश्वर के अधिकार के साथ कि “ओ पापी! वह आपसे प्रेम करता है। अनन्त काल के प्रेम से वह आपसे प्रेम करता है! यद्यपि कि इन सभी वर्षों में आप उसका तिरस्कार करते रहे हों, उसे दु:ख देते हों, तो भी वह आपसे इतना प्रेम करता हैं, कि अपना स्वयं का आनन्द आपको देना चहाता है।”

“तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा” (सप. ३:१७)

आपने मनुष्यों को सुखी और आनन्द पूर्ण देखा होगा, सम्भवत: उनसे ईर्ष्या भी की हो, परन्तु क्या आपने कभी परमेश्वर को खुश देखा है? विभिन्न प्रकार के मानवीय आनन्दों का आपको कुछ अनुभव है, परन्तु हम में से कोई स्वप्न में भी नहीं देख सकता कि हमारा सृष्टिकर्ता जब वह आनन्दपूर्ण होता है तो कैसा दिखता है। फिर भी यह सच है कि परमेश्वर आनन्द मनाता है। ‘तेरा परमेश्वर यहोवा ... वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।’

आपने मनुष्यों को गाते हुए देखा है। मान लें कि आपको स्वर्गदूतों को गाते हुए सुनने का विशेषाधिकार मिला होगा। वह स्वर्गीय गीत यहाँ के किसी भी गीत से कहीं अधिक मधुर और आनन्द पूर्ण रहा होगा। परन्तु कल्पना कीजिए कि आप स्वयं प्रभु को गीत गाते सुन सकते। आपने स्वयं अपने आपको गाते हुए सुना है, आपने दूसरों को गाते

हुए सुना है, आपने कल्पना में स्वर्गदूतें को गाते हुए सुना है। फिर आप कैसे अनुभव करते यदि आप अपने जीवित और प्रेमी प्रभु को आपके कारण गाते हुए सुन सकते?

फिर भी यह हमारे लिए परमेश्वर का वचन है। आपको प्रेम करने और बचा लेने और अपना प्रेम आपके हृदय में उण्डेल देने के बाद वह आपके कारण आनन्द से गाना आरम्भ करेगा। नए जन्मे बच्चे के साथ एक माँ को ध्यान से देखिए। वह नन्हे-मुन्ने के लिए इतने प्रेम से भी हुई है, गले से लगाती और सब जगह चूमती और यहाँ तक कि उसके पैरों को भी अपने मुंह में रख लेती है। उससे पूछिए वह क्या कर रही है? वह आपको बताएगी कि वह अपने बच्चे पर अपना प्रेम उण्डेल रही है। जब वह अपना प्रेम अपने बच्चे के हृदय में उण्डेलती है तब उसका मुख आनन्द से प्रकाशित हो जाता है और उसका गीत मधुर होता है। परमेश्वर भी हमारे कारण इसी तरह गाएगा। यदि आपके हाल ही में नया जन्म पाया है और उसके प्रेम को ग्रहण करने के लिए तैयार है, तो आप उसे एक गीत गाते हुए सुनेंगे: किसी स्वर्गदूत के गीत से कहीं मधुर! ऐसा प्रभु का 'आनन्द' है – 'आनन्द' जिसका अनुभव 'वह' अपना प्रेम हम में अधिक से अधिक उण्डेलने के द्वारा करता है। ऐसा है वह आनन्द जो हमें ईश्वरीय बल से भर देता है।

हम परमेश्वर के वचन से देखते हैं कि ऐसे सीमा विहीन प्रेम को ग्रहण करने के लिए हमें योग्यता और क्षमता दी जानी है। परमेश्वर के प्रेम का विस्तार चार परिणामों में होता है: ऊँचाई, गहराई, लम्बाई और चौड़ाई। यह है ईश्वरीय प्रेम। मानवीय प्रेम का केवल एक ही परिमाण होता है यह प्रेम केवल १० या ३० या शायद ५० वर्ष तक चलता है। यह आज आरम्भ होता है और कल चला जाता है परन्तु परमेश्वर के प्रेम की कोई सीमा नहीं है। उसका विस्तार अनादि काल से अनन्तकाल तक होता है। स्वर्ग के वह उस गहरे से गहरे स्थान तक पहूँचता है जहाँ तक कि मनुष्य जा सकता है। आपके पाप आपको स्वयं

नरक की गहराइयों तक खींच ले जा सकते है, आपके पास पूर्ण कार्य आपकी विनाश के गड़हे तक ले जा सकते हैं, आपकी अभिलाषाएँ आप को अन्धकार या मलिनता के स्थान तक ले जा सकती है, जहाँ पर उड़ाऊ पुत्र के समान आपका भोजन सूअरों का भोजन होगा। फिर भी परमेश्वर का प्रेम आपको उस दलदल से खींच निकालने और ऊँचे तक उठाने में समर्थ है।

आपके पिता कह सकते हैं: "मेरे बेटे, तुम्हारे लिए कोई आशा नही"। आपको माता निराशा में कह सकती है: 'तुम्हारे लिए मेरी सब आशाएँ छिन्न-भिन्न हो चुकी है'। आपके भाई और बहिनें आपके पाप-पूर्ण जीवन के कारण आपकी अपना कहने में लज्जित होते हों या आपको अपना मानने से अस्वीकार करते हों। यहाँ तक कि प्रचारक भी कहते हों: 'उस मनुष्य के उद्धार पाने की कोई आशा नहीं है'। फिर भी हमारा प्रभु आपको छोड़ नहीं देगा। अभी भी आपके लिए आशा है।

पाप में आप कितने भी गहरे क्यों न चले गये हों, नैतिक रुप से आप कितने भी नीचे क्यों न गिर गये हों, पिछले वर्षो में आप कितने भी हठी क्यों न रहे हों, परमेश्वर का प्रेम आपका उद्धार करने में सामर्थी है। "इसीलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते है, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है" (इब्रा. ७:२५)

यह तो एक मर्म है कि आपके बीते हुए दिनों के लज्जापूर्ण होने पर भी आप परमेश्वर के सहकर्मी बन सकते है। यह उसके प्रेम का आश्चर्य कर्म है और चूँकी वह प्रेम इतना महान है कि उसका पूरा अर्थ समझने के लिए बड़ लम्बे समय की आवश्यकता होती है। वह आपकी असमर्थताओं को जानता हैं, फिर भी वह आपसे प्रेम करता है, और उसका उद्देश्य आपको उस स्थिति तक ले चलना हे जिसमें वह चाहता है कि आप हों। परन्तु

आपको परमेश्वर को अनुमति देनी चाहिए कि उस सेवा, उस पद के लिए, जिसके लिए उसने आपकी बुलाया है वह आपकों तैयार करें और प्रशिक्षण दें।

“यह देख कर कि यहोवा ने यबूसी अर्नोन के खलिहान में मेरी सुन ली है दाऊद ने उसी समय वहाँ बलिदान किया... तब दाऊद ने कहा, यहोवा परमेश्वर का भवन यही है और इस्त्राएल के लिए होमबलि की वेदी यही है” (१इति.२१:२८; २२:१)।

जब परमेश्वर ने दाऊद को पहिले पहल चुना, निस्सन्देह पूरे परिवार में बहुत आनन्द था। शमूएल की घोषणा के कारण माता, पिता, भाई आनन्द से भर गये। फिर भी एक परिवार के रुप में वे एक सांसारिक राजा के पद से बढ़ कर नहीं सोच सके। उन्होंने सोचा होगा कि दाऊद के पद के कारण उन्हें लाभ और विशेषाधिकार मिल सकेगा। परन्तु एक सांसारिक राज्य मात्र के लिए परमेश्वर दाऊद को नहीं बुला रहा था। उसके लिए परमेश्वर के पास उससे कही उँचा और महान राज्य था।

हमने दाऊद के जीवन में आनन्द की बढ़ती को कई अवस्थाओं में होते देखा है, और हमने वह बात भी देखी जिसने परमेश्वर और दाऊद दोनों को महानतम सन्तोष दिया, अर्थात दाऊद को मन्दिर के लिए दी गई परमेश्वर की योजना और नमूने का प्रगटीकरण। अब हम उस प्रशिक्षण के बारे में कुछ देखना चाहते हैं जो उसे इस स्थिति तक लाया।

इससे पहिले कि परमेश्वर अपनी योजना उस पर प्रगट कर सकता उसे दाऊद को दु:ख के पथ के द्वारा यबूसी अर्नोन के खलिहान तक लाना पड़ा। तब बाद में दाऊद ने समझा कि जमीन के जिस टूकड़े पर उसने अपनी वेदी बनाई और मेलबलि चढ़ाई थी वही प्रभु की अपना मन्दिर बनाने के लिए चाहिए था। आरम्भ से ही परमेश्वर दाऊद को बता सकता था कि उस स्थान पर परमेश्वर का भवन बनाए, परन्तु उस समय दाऊद ऐसी आज्ञा

या निर्देश को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं था। केवल तब ही, जब हम सच्ची रीति से इच्छुक और तैयार होते हैं, परमेश्वर अपने हृदय के निर्णय हमें बता सकता है।

जब दाऊद ने समझ लिया कि परमेश्वर उस भूमि के टुकड़े को उसके मंदिर के लिए चाहता था, तब वह गया और उसके मालिक को दाम देने लगा। इस पर यबूसी अर्नोन ने कहा : 'आप मेरे राजा हैं, बिना पैसे दिये ही आप इसे ले सकते है।' परन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, 'मैं प्रभु के लिए कुछ भी वस्तु नहीं लूँगा जिसका मुझे दाम न देना पड़ा हो।' यदि दाऊद आजकल का मसीही होता तो उसने कहा होता: 'मुफ्त भूमि, मैं उसे लूँगा, निश्चय ही! ऐसा करके मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी! ' परन्तु परमेश्वर ऐसी कोई भी वस्तु ग्रहण नहीं करेगा जिसका आपको दाम न देना पड़ा होगा।

उस दाम को याद कीजिए जो दाऊद ने उसी खलिहान में पहले ही दे दिया था। खलिहान वह स्थान है जहाँ आप गेहूँ को भूसे से अलग करते है। उसके जीवन के आरम्भ में सब कह रहे थे, दाऊद कितना बढ़िया व्यक्ति था, परन्तु उसके पूरे इतिहास में दाऊद के दिमाग में भूसे को छोड़ कर दूसरा बहुत कम ही दिखाई दिया। वह सोचता था वह बुद्धिमानी से भरा है परन्तु उसकी असफलताओं के द्वारा परमेश्वर ने दाऊद से कहा 'भूसे की और देख'। कई 'खलिहानों' में लाए जाने के बाद ही दाऊद का दिमाग भूसे से छुटकारा पा सका। यद्यपि कि वह राजा था फिर भी परमेश्वर को उसे कई बार घुड़कना पड़ा और छुटकारे के लिए उसे ऊँचा दाम देना पड़ा।

हम सभी को पमरेश्वर के सेवक होने के लिए एक भारी कीमत देनी पड़ती है, हमें अपने भूसे से छुटकारा पाने के लिए तैयार होना है और वह भी सबसे पहिले दिमाग के भूसे से! वह भूसा क्या है? परमेश्वर की दृष्टि में वह भूसा वह सब बातें हें जो हमने अपनी बुद्धि की योग्यता से प्राप्त की हैं। यशायाह ४०:६ में हम पढ़ते हैं: "सब प्राणी घास हैं।" और

रोमियों ७:१८ में पौलुस कहता हैं: "मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती।" ध्यान दीजिए पौलुस ने यह वचन अपने परिवर्तन के बाद कहे। फिर भी कई बार हम अपने भूसे से छुड़ाए जाने के लिए तैयार नहीं होते। यूहन्ना १२:२४ में प्रभु ने स्वयं कहा : "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़ कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है: परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।" हमारा प्रभु ही यह गेहूँ का दाना है - 'वही' हमारा सच्चा ज्ञान है। हमारे सभी अनुभवों की योजना इस तरह की गई है कि केवल 'उस' ज्ञान पर आधारित रहना हमें सिखाएँ।

"इस प्रकार सब इस्त्राएली यहोवा की वाचा को सन्दूक को जयजयकार करते, और नरसिंगे, तुरहियां और झांझ बजाते और सारंगियां और वीणा लिये हुए ले चले।... तब परमेश्वर का सन्दूक ले आ कर उस तम्बू में रखा गया, जा दाऊद ने उसके लिए खड़ा कराया था; और परमेश्वर के सामने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए गए"

(१ इतिहास १५:२८; १६:१)

जब भूमि दाऊद के द्वारा खरीद ली गई थी तब उसकी अभिलाषा थी कि वह परमेश्वर के सन्दूक को वहाँ लाये, परन्तु फिर एक बार उसने प्रभु को असफल किया। १ इतिहास १३:१ में हमने पढ़ा कि दाऊद ने सहस्त्रपतियों और शतपतियों और सब प्रधानों से सलाह ली। वह परमेश्वर के सन्दूक को उसके स्थान पर लाना चाहता था, मगर ऐसा वह एक सांसारिक योजना के द्वारा और सांसारिक माध्यमों से और सांसारिक विधि में करना चाहता था।

गिनती की पुस्तक में प्रभु ने सन्दूक को लाने ले जाने के लिए अपना स्वर्गीय नमूना दिया था। फिर भी यहाँ एक ऐसा बुद्धिमान और सामर्थी राजा, ईश्वरीय नियमों से अनजान

रह कर काम पूरा करने के लिए उसकी योजनाएँ असफल होती हैं। किसी भी मनुष्य को ईश्वरीय क्रम को बदलने की सामर्थ या अधिकार नहीं है चाहे वह प्रचारक हो या पास्टर, भारतीय हो या यूरोपी, निर्धन हो या धनी। इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो।

परमेश्वर दाऊद को उसके होश में ले आया और १ इतिहास १५ में उसने लेवियों को इकट्ठा किया कि परमेश्वर के सन्दूक को उसी स्थान तक ले जाएँ जिसे उसने यबूसी से खरीदा था। वह दाऊद के लिए कैसी प्रसन्नता का दिन था।

कैसे बड़े आनन्द और प्रसन्नता के साथ वे कई साल भटकने के बाद सन्दूक को ले आए थे। "और दाऊद ने प्रधान लेवियों को आज्ञा दी, कि अपने भाई गवैयों को बाजे अर्थात् सारंगी, वीणा और झाँझ दे कर बजाने और आनन्द के साथ ऊँचे स्वर से गाने के लिए नियुक्त करें" (१ इतिहास १५:१६)। वह एक बड़े आनन्द का समय था – अपने हृदय की गहराई से गाते हुए गवैयों के साथ, उस आनन्द के दिन दाऊद स्वयं उत्सव मनाने में सम्मिलित हुआ (२७ वाँ वचन)।

इस तरह इससे पहिले कि परमेश्वर उसे सन्दूक को उसके उचित स्थान में लाने का आनन्द प्राप्त करने की अनुमति देता दाऊद को दो पाठ सीखने पड़े। सबसे पहिले, उसे सीखना पड़ा कि उसका दिमाग सब प्रकार के भूसे और सूखी घास से स्वतन्त्र होना चाहिए, ताकि परमेश्वर के ज्ञान के लिए स्थान मिल सके। दूसरे, उसे सीखना पड़ा कि परमेश्वर के घर के लिए ईश्वरीय क्रम को बड़ी कठोरता से और पूरी तरह पालन करना चाहिए। परमेश्वर के कार्य और उसकी कलीसिया के लिए ईश्वरीय योजना को समझने के लिए और इन पाठों को सीखने के लिए हमें कई वर्ष लग सकते हैं। परन्तु अन्त में जब हम परमेश्वर के सन्दूक को उसके स्थान पर आते हुए देखेंगे तो हम बड़े आनन्द से भर जाएँगे।

सन्दूक प्रभु यीशु मसीह को प्रदर्शित करने वााला प्रतीक है। उसे आपके हृदय में, आपके घर में और आपकी कलीसियो के क्रम में उचित स्थान दिया ही जान चाहिए। जब ऐसा होता है तब वहाँ बड़ा आनन्द होता है। दाऊद ने कई युद्ध जीते परन्तु किसी ने भी उसे हृदय का वह आनन्द नहीं दिया जैसा उसने परमेश्वर के सन्दूक को इसी स्थान पर, जिसे उसने अर्नोन से खरीदा था, आकर ठहरते हुए देखने से प्राप्त किया। जब हम प्रभु यीशु मसीह को विश्वासियों के हृदयों में राजाओं के राजा के रुप में, परिवारों में उनके सिर के रुप में, और मण्डली में प्रभु के रुप में सिंहासन पर बैठे देखते है तो यह हमारा आनन्द और बल होता है।

ये वचन कई घरों में पाए जाते है 'मसीह इस घर का प्रधान है'। परन्तु जब बार-बार आप वहाँ दो या तीन दिन क लिए ठहरते हैं, तब आप जान पाते हैं कि वास्तव में वहाँ प्रधान कौन है। पत्नी प्रधान है और बलवन्त दिखने वाला पति भी अपनी पत्नी के सामने काँपता है। वह उसका मन बदल सकती है – गुस्से से या आँसुओं – से वही जानती है कि किस तरह। परन्तु हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं उन घरों के लिए वहाँ प्रभु ही वास्तव में प्रधान है। सदैव तीन बातों को ध्यान रखना है: पहिले, प्रभु यीशु मसीह आपके व्यक्तिगत रुप से प्रधान होने चाहिए दूसरे वे आपके परिवार के प्रधान होने चाहिए, तीसरे जिस मण्डली के आप सदस्य हैं उसके वे प्रधान होने चाहिए। जब ऊपर लिखी बात सत्य हो जाएगी केवल तब ही कह सकेंगे कि आप परमेश्वर के सन्दूक को उसके ठहरने के उचित स्थान पर ला कर रख पाये है।

यह हमारा आनन्द है, परन्तु फिर से यह तो केवल आरम्भ ही है। परमेश्वर के पास दाऊद के लिए बढ़ कर एक आनन्द था। १ इतिहास १५ में आनन्द कितना बड़ा दीख

पड़ा, कैसा गायन, वादन और नृत्य था। परन्तु परमेश्वर के पास दाऊद के लिए अभी भी अधिकता से बहुत कुछ था।

क्या आप सच्चाई से कह सकते हैं कि प्रभु का आनन्द ही आपका बल है? क्योंकि आप परमेश्वर के हृदय में और अधिक से अधिक सम्पूर्णता से प्रवेश कर रहे हैं इसलिए क्या आपका आनन्द बढ़ रहा है? हम आपको यही आनन्द उसके नाम में भेंट करते हैं।

५. देने में आनन्द
“हे परमेश्वर में तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ।”
(भजन ४०:८)

शारीरिक बढ़ती का भेद बल है। प्रभु का आनन्द जो हमारी सब परिस्थितियों और अनुभवों और जिम्मेवारियों में हमारा वास्तविक बल है, वह हमारी सच्ची आत्मिक बढ़ती का भेद है।

उदाहरण के लिए हम हाल ही में जन्मे को लें। वह बच्चा बढ़ता है और विकसित होता है, परन्तु अपने जीवन के पहिले दो वर्षों में वह अभी बच्चा ही है। फिर वह बाल्यावस्था के दूसरे भाग में प्रवेश करता है; वहाँ से वह किशोरावस्था में प्रवेश करता है, अपना विद्यार्थी जीवन आरम्भ करता है, और कई बातें सीखता हैं। अन्त में वह स्कूल और कालेज से निकल कर युवावस्था में प्रवेश करता है। अब वह अपने विभिन्न अनुभवों के द्वारा जीवन के बारें में अधिक समझने में समर्थ होता है और गृह जीवन में या राष्ट्रीय विषयों में अधिक जिम्मेवारी उठा सकता है।

हमारे आत्मिक जीवन को भी इन्हीं अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है। उस जीवन का आरम्भ हम एक आत्मिक बच्चे के रुप में करते हैं; जब हम पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पा कर अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और प्रभु यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के रुप में विश्वास करते हैं। यह बात सच है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि हम सदैव बच्चे ही रहें। फिर भी दु:ख की बात है कि कुछ महिनों के स्थान पर कई वर्षो तक आत्मिक बच्चे ही बने रहना यह सहज संभव है, और कहते हुए दुख होता है कि कई बच्चे ही बने रहते है। कई बार वे जिनका आरम्भ दुर्बल था और नींव कच्ची थी, वे ही धीरे-धीरे

आत्मिक रीति से बढ़ते है। परन्तु परमेश्वर चाहता है कि उसके बच्चों में से प्रत्येक पूर्ण वृद्धि और जिम्मेदारी तक आ जाए।

परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि आप प्रतिदिन बढ़े और शीघ्र ही एक स्थिति से दूसरी स्थिति तक बढ़ते जाएँ। जैसे आप परमेश्वर का वचन पढ़ते और उस पर मनन करते हैं आप उसको जानते जाते है और इसलिए उसकी उपस्थिति में रहने के लिए आपमें बढ़ती हुई भूख रहती है। जिस प्रकार एक छोटे बच्चे की अपने माता पिता की उपस्थिति में रहना प्रिय लगता है उसी तरह परमेश्वर के बच्चे के रुप में आप उसकी उपस्थिति में रहने की तीव्र इच्छा रखते हैं और परमेश्वर की उपस्थिति में समय व्यतीत करने के द्वारा ही आप उसके ज्ञान में बढ़ते है।

जब हम प्रभु में आनन्द मनाने लगते हैं तो उसकी इच्छा पूरी करने में हमें वास्तविक आनन्द आने लगता है। “हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ” (भजन ४०:८)। प्रभु को जानने और उसे प्रसन्न करने वाले होने की इच्छा तब ही आती है जब हम आत्मिक उन्नति करते जाते हैं। कभी-कभी प्रभु उसकी इच्छा जानने के लिए हमें महिनों वा वर्षों प्रतिक्षा कराता हैं; और जब हम बाद जोहते हैं तो हम कई बहुमुल्य पाठ सीखते है। हम सीखते हैं कि किस रीति से उसके नाम के अधिकार का प्रयोग करें, उसके वचन में छिपे हुए मर्मो को हम समझना सीखते है; और इसके द्वारा हम उस स्थान तक पहुँच जाते हैं, जहाँ उसके लिए लज्जित होने को भी तैयार होते हैं। जब हम इन सभी अनुभवों में से हो कर जाते है, हम आत्मिक पुरुषावस्था को बढ़ते है, और उनका अर्थ यह होता है कि हम उस आत्मिक जिम्मेदारियों को उठाने के लिए तैयार हैं, जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी हैं और हम से बाँटने के लिए बाट देख रहा है। ठीक जिय रीति से हमारी

राष्ट्रीय एवं पारिवारिक जिम्मेवारियाँ हैं उसी तरह परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मिक जिम्मेवारियाँ उठाएँ: यहाँ इस पृथ्वी पर और स्वर्गीय स्थानों में भी।

हम पहिले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर ने दाऊद को एक बड़े उद्देश्य से चुना। हमने उसके जीवन की रुपरेखा का अध्ययन किया और देखा कि किन अवस्थाओं में से हो कर उसने प्रभु के आनन्द में प्रगति की। इन सभी अनुभवों में वह ज्ञान प्राप्त करता रहा। इससे पहिले कि परमेश्वर उसे पूरा कार्यभार और आत्मिक जिम्मेवारी दे सकता उसे उन सब वृद्धि की अवस्थाओं में से हो कर जाना पड़ा।

उन्हें फिर से स्मरण कीजिए। स्मरण कीजिए कि किस रीति से परमेश्वर ने दाऊद को गुप्त स्थानों में प्रशिक्षण दिया, जब वह भेड़ों के पीछे चलता रहता, और अन्त में एक दिन शमूएल ईश्वर के भविष्यद्वक्ता के ईश्वरीय कार्यभार को जानते हुए राजा का अभिषेक देने आया। यह परमेश्वर के लिए तब तक असम्भव है कि हमें चुने और अभिषेक करे जब तक कि हम पूरी रीति से परीक्षा में जा कर परखे और योग्य न पाये गये हों।

बाद में दाऊद ने सीखा कि प्रभु का युद्ध उसी के नाम से जीतना है और विश्वासी को भी सीखना पड़ेगा कि किस रीति से विश्वास के द्वारा उन आत्मिक हथियारों का उपयोग करें, जो प्रभु ने उसके लिए प्रबन्ध किए हैं (२ कुरिन्थियों, १०:४)।

फिर हम ने देखा कि किस तरह दाऊद ने पलिश्तियों से हाथ मिलाए और कैसे उसकी मूर्खता में उसके लिए और उसके लोगों के लिए परमेश्वर की पूरी इच्छा खोज न निकालने के कारण वह सब कुछ खो बैठा। परन्तु इसके बाद वाले अध्याय में उन्हीं हथियारों के द्वारा जिनके साथ वह पहिले असफल हो गया था अब हम उसे अपनी हानियों को वापस लौटा लाते देखते है। उसी रीति से परमेश्वर और उसके वचन के कई शत्रू हैं,

जिन्हे हम तब तक हम परमेश्वर को इच्छा में नहीं है हम पराजित हो जाएँगे। दाऊद ने उस पाठ को सीखा और उसी में से हमें भी सीखना होगा।

उसके बाद दाऊद ने यबूसियों को हराया और यरुशलेम से भागा दिया; सिय्योन पर उनके निवास और अधिकार का अन्त कर दिया। यह हमें स्मरण दिलाता है कि उसी रीति से हमें भी संसार की वस्तुओं से या उनके व्यवहार या उनकी मूर्तिपूजा से कोई सम्बन्ध और एकता नहीं रखनी चाहिए। हम कई विजयों को प्राप्त कर सकते है परन्तु यदि इस विषय में परमेश्वर द्वारा दिया गया भार सम्भालने में असफल रहे तो इसका परिणाम आत्मिक वृद्धि की रुकावट और कई आँसू होंगे। हमारे आत्मिक जीवन में "यबूसियों" के कारण ही कई लोग अपवित्र और भटके हुए हैं। और इसी कारण परमेश्वर का कार्य स्वतन्त्रता से आगे नहीं बढ़ सकता और जब तक ये यबूसी दूर नहीं किए जाएँगे कोई प्रगति नहीं हो सकती, या प्रभु यीशु मसीह को राजा के रुप में उनका सही स्थान नहीं दिया जा सकेगा। दाऊद द्वारा परमेश्वर के वचन की केवल आज्ञा पालन के कारण ही उसे विजयी होने के लिए समर्थ किया गया और सिय्योन के गढ़ को भी परमेश्वर के लिए प्राप्त किया जा सका। इमें परमेश्वर के सेवक के रुप में, चाहे कुछ भी क्यों न हो यबूसियों को बाहर भगाना चाहिए। ज्योति और अन्धकार के बीच में कोई मेल नहीं हो सकता।

दाऊद को भी सांसारिक ज्ञान से छुटकारा पाना पड़ा। हमने देखा कि कैसे सांसारिक ज्ञान और घमण्ड में उसने सेना को गिनना आरम्भ कर दिया और लोगों के बल को मान देने लगा। इसलिए परमेश्वर को उसे दण्ड देना पड़ा और यबूसी अर्नोन के खलिहान में दाऊद ने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने उसे क्षमा किया हम भी यदि सांसारिक ज्ञान और स्वयं की इच्छा में कार्य करें तो परमेश्वर के द्वारा हमारा न्याय किया जाएगा, परन्तु यदि हम अपने पापों को मान लें और पश्चाताप करें तो हमें परमेश्वर का अदभुत और

छिपा हुआ उद्देश्य दिखाया जाएगा, जैसे दाऊद ने भी उसके अनुभव और उसके पश्चाताप और सुधारे जाने के बाद यरुशलेम में परमेश्वर के भवन का निर्माण स्थल पाया।

दाऊद के समान हमें भी परमेश्वर के आदेशों को उसके द्वारा निर्धारित रीति से पालन करना सीखना पड़ेगा, नहीं तो दुर्घटना हो जाएगी। दाऊद की स्वयं की योजना से सन्दूक को परमेश्वर के भवन में लाने से केवल असफलताएँ और दु:ख ही प्राप्त हुए, परन्तु जब उसने ईश्वरीय निर्देश का पालन किया वहाँ पूरे राष्ट्र के लिए बड़ा आनन्द और प्रसन्नता हुई।

अन्त में, दाऊद के लिए सबसे अदभुत दिन वह था जब परमेश्वर ने उसको मन्दिर का पूरा नमूना विस्तार पूर्वक सौंप दिया (१ इति॰२८:१९)। उसके जीवन के आरम्भ में परमेश्वर इसे प्रगट नहीं कर सकता था यद्यपि कि वह ऐसा सामर्थी, बुद्धिमान और स्वाभविक रुप से कुशल व्यक्ति था। यद्यपि उसने गोलियात राक्षस को मार डाला था, फिर भी परमेश्वर को तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ी, जब तक कि दाऊद आत्मिक रुप से बढ़ न गया। और इसके बाद ही वह उस पर इस नमूने को प्रगट कर सका। आज बहुत से लोग 'कलीसिया' या 'मसीह की देह' के बारे में स्वतंत्रता से बोलते हैं, परन्तु बहुत ही कम लोग इन शब्दों का सही अर्थ समझते हैं। बहुत कम ही कलीसिया के लिए परमेश्वर का सच्चा विचार समझते है। उनकी 'आत्मिक' बातों के कहे जाने पर भी बहुत से अपने जीवन में ईर्ष्या और विरोध के द्वारा दर्शां देते हैं कि जो वे जानने की बात कहते है उसे वे नहीं जानते। परमेश्वर का उद्देश्य है कि अपना अधिकार और ज्ञान प्रधानों और अधिकारियों को स्वर्गीय स्थानों में प्रगट करें जैसा कि कलीसिया की सहभागिता के द्वारा प्रदर्शित हो रहा (इफि॰ ३:१०)। परमेश्वर की सम्पूर्णता कलीसिया में समानी है और उसी के द्वारा

प्रदर्शित की जाती है, और कोई मसीही मात्र व्यक्तिगत रुप से ऐसी बुलाहट और उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकता।

"मैंने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है: और अब मैंने आनन्द से देखा है, कि तेरी प्रजा के लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, वह अपनी इच्छा से तेरे लिए भेंट देते हैं।"

(१इति॰ १९:१७)।

केवल तब ही जब आप आत्मिक रुप से प्रशिक्षित और कई अनुभवों से होकर आत्मिक परिपक्कता (प्रौढ़ता) को लाए जाते है आप परमेश्वर ने कई युद्ध लड़े, परन्तु युद्धों में ही उसने आत्मिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। १ इतिहास २६:१७ में हम पढ़ते हैं कि इन युद्धों की लूट ही परमेश्वर के भवन को शोभायमान करने के लिए समर्पित की गई थी। अपने बहुत से सभी अनुभवों के द्वारा दाऊद मन्दिर के लिए सामग्री इकट्ठी कर रहा था। जब शाऊल राजा होने के लिए चुना गया था, उसे बिना किसी प्रशिक्षण के एकदम ही मुकुट पहना दिया गया था, परन्तु अन्त में परिणाम स्वरुप परमेश्वर द्वारा उसके हठीलेपन और अन्धेपन के कारण उसका अस्वीकार किया गया; परन्तु जब परमेश्वर दाऊद को सिंहासन पर लाया वह पहिले ही कई कठिनाइयों और परीक्षाओं में से होकर जा चुका था। और इन्हींने उसको सिंहासन के योग्य बनाया। दाऊद की असफलताओं के होते हुए भी परमेश्वर ने उसे त्यागा नहीं, उसे घुड़की और ताड़ना और प्रशिक्षण देता गया और उसके उच्चतम उद्देश्य के लिए उसे तैयार करता गया।

यदि आपका नया जन्म नहीं हुआ है तो शाऊल के समान आप कभी भी परमेश्वर के कार्य में प्रवेश नहीं कर सकते या राज्य में आपको भाग नहीं मिल सकता। शाऊल पूरी रीति से सिंहासन के लिए अस्वीकृत कर दिया गया, उसी तरह से आप भी होंगे। परन्तु

यदि, दूसरे हाथ में, आप परमेश्वर के बच्चे हैं और आपने उसकी आज्ञा पालन के मार्ग में चलना आरम्भ कर दिया है तो परमेश्वर आपको कभी नहीं छोड़ेगा जब तक कि वह आपको पूरा, स्पष्ट नमूना न दे दे जिस तरह उसने दाऊद को दिया था। उस नमूने के विवरण का मूल स्वर्गीय था, क्योंकि मन्दिर मनुष्यों के उपयोग के लिए नहीं था, न मनुष्य का ध्यान खींचने के लिए; और न ही मनुष्य की कुशलता प्रदर्शित करने के लिए था। प्रत्येक नाप, प्रत्येक सामग्री, यहाँ तक कि खिड़कियाँ और दरवाजे और रंग प्रतीकात्मक रीति से प्रभु यीशु मसीह को उसकी कलीसिया में प्रदर्शित करने के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट करने के लिए थे। कलीसिया मनुष्य के रहने के लिए बनाया गया पृथ्वी पर का भवन नहीं है जहाँ पर पैसा इकट्ठा किया जाता है और भाषण दियें जाते हैं। परन्तु वह एक आत्मिक भवन है, जिसमें मसीह में होकर परमेश्वर का प्रेम मनुष्य के उद्धार के लिए प्रगट होना है।

अन्त में, कई वर्षो के अनुभव और प्रशिक्षण के बाद दाऊद परमेश्वर के भवन के दर्शन के लिए आत्मिक जिम्मेदारी की स्थिति में आ गया था और कह सकता था, 'अब मैं जानता हूँ, किस लिए परमेश्वर ने मुझे चुना'। अब अन्त में वह मन्दिर के नमुने को राष्ट्र को दिखा सकता था। और इस रीति से अपने पुत्र और जो उसके साथ थे उनके साथ वह जिम्मेदारी बाँट सकता था जो परमेश्वर ने उस पर डाली थी। इसलिए उसने राज्य के अगुवों को, राजकुमारों, लेवियों और सहस्त्रपितयों को इकट्ठा किया, सुलैमान को नमूना दिखाकर उसने अपने सब सामर्थी मनुष्यों की इस कार्य में भाग लेने का अवसर और विशेषाधिकार दिया। "कौन आज अपनी इच्छा से अपनी सेवा प्रभु के लिए समर्पित करता है?" (१ इति० २९:५)

अब मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि किस तरह इस अध्याय में यह विशेषाधिकार केवल उन्हीं के लिए था जो 'इच्छापूर्ण' हृदय के थे। दाऊद एक बुद्धिमान और सामर्थी और कुलीन राजा था, परन्तु उसने परमेश्वर के भवन को बनाने में कोई भी भाग लेने के लिए किसी भी व्यक्ति पर बल प्रयोग करना अस्वीकार कर दिया।

हम प्रचार कर रहे हों या प्रार्थना, या शिक्षा देते हों, या परमेश्वर की सेवा में कोई शारीरिक परिश्रम कर रहे हों, परन्तु यदि वह मनुष्य के दबाव में किया जा रहा होगा तो परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहण करने योग्य नहीं होगा। यदि आप किसी भी समय परमेश्वर के लिए कोई भी कार्य केवल बल प्रयोग के कारण करें या उसके द्वारा इस पृथ्वी पर जो कुछ प्राप्त करते हैं उसके लिए, तो फिर आपक लिए स्वर्ग में कोई इनाम नहीं होगा। परमेश्वर इच्छा पूर्वक सेवा चाहता है। दाऊद ने स्वयं बहुत सा सोना चाँदी और पीतल इकट्ठा किया था। इन वस्तुओं की कोई कमी नहीं थी; परन्तु अब उसने उन सभों के लिए अवसर बनाया जिनकी इच्छा भेंट में कुछ भाग लेने की थी। "तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन और अपनी इच्छा से यहोवा के लिए भेंट दी थी और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ" (१ इति॰ २९:९)। शायद हम सच्चाई के साथ कह सकते है कि यह दाऊद के जीवन में सबसे सुखी दिन था, और वास्तव में राष्ट्र के जीवन में भी। प्रभु का आनन्द उनका बल था।

परमेश्वर ने मनुष्य को सिद्ध बनाया था और योजना बनाई थी कि वह राज्य करे। परन्तु चूंकि जगत में पाप प्रवेश कर गया, दाऊद को कई युद्ध लड़ने पड़े और गोलियात, पलिश्ती और यबूसियों को हराना पड़ा – और फिर इन युद्धों की लूट में से परमेश्वर का मन्दिर बनाने के लिए सामग्री इकट्ठी करनी पड़ी। हमारे प्रभु यीशु ने क्रूस पर एक युद्ध लड़ने के द्वारा पाप को निपटा दिया और सदा काल के लिए हमारे शत्रु को हरा दिया, और

परमेश्वर के भवन को बनाने और शोभायमान करने के लिए 'उसे' आवश्यक प्रत्येक सामग्री का उसने 'स्वयं' में प्रबन्ध किया है। फिर भी नई सृष्टि और पुरानी सृष्टि के बीच अन्तर रह ही जाता है। जब परमेश्वर ने पृथ्वी को बनाया – उसने कहा और वैसा ही हो गया। आज यदि वह चाहता तो नई सृष्टि को एक बार में ही सिद्धता को ला सकता था, परन्तु वह जवान और वृद्ध, स्त्री और पुरुष, हर आयु और वर्ग और राष्ट्र के, हर प्रकार के लोगों को बुला रहा है और उसने कह रहा है, 'क्या तुम अपने आपको अपना सब कुछ, मेरे घर – प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया – के लिए देने की इच्छुक हो?' आप में से कौन अपने को युद्ध और परमेश्वर की सेवा के लिए देने को इच्छुक है? इस पृथ्वी पर के तथाकथित चर्च के लिए नहीं, परन्तु स्वर्गीय कलीसिया, उसकी देह के लिए?

अपने सामने इन विरोधी बातों को हमेशा रखिए - दाऊद ने कई युद्ध लड़े। हमारे प्रभु ने सिर्फ एक ही युद्ध लड़ा – सब समयों का महान युद्ध। दाऊद ने मन्दिर के लिए बहुत सामग्री इकट्ठी की – सोना, चाँदी, लकड़ी और बहुत सी कीमती और बहुमूल्य वस्तुएँ। हमारे प्रभु ने अपना जीवन हमें परमशेवर के आत्मिक भवन के लिए सामग्री जुटाने के लिए दे दिया। दाऊद के पास भवन के लिए स्वर्गीय नमूना था। परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा आपको और मुझे उसकी स्वर्गीय कलीसिया के नमूने का प्रत्येक विवरण उसकी पुस्तक विवरण उसकी पुस्तक, परमेश्वर के जीवित वचन में देता है।

हमारे पास किसी भी दाऊद या सुलैमान से महिमा में कहीं बढ़ कर और ऊँचे हमारे प्रभु मसीह है। उन्होंने अपने स्वयं के लहू की अन्तिम बूँद भी हमें हमारे पापों से धोने के लिए और हमें शत्रु पर अधिकार देने के लिए बहा दी, और उन्होंने हमें अपनी पवित्र आत्मा हमारी सहायता के लिए और अगुवाई करने के लिए और उनके जीवन को हमारे अन्दर वास्तविक बनाने के लिए दी है।

अब कृपा कर उनके वचनों को सुनिये जब वह अपने खीले लगें हाथो की फैलाए आपके सामने खड़ा होता है और अनुरोध करता है: “कौन आज अपनी इच्छा से अपना सेवा प्रभु के लिए समर्पित करता है?” (१ इति० २९:५)। ‘कौन मुझे पहले अपना जीवन और फिर अपनी सम्पत्ति, अपना धन, अपना समय और यहाँ तक प्रिय जनों को भी देने के लिए तैयार है?’ हमें दर्शाया गया है कि जिन्होंने उसकी सेवा की उन्होंने ऐसा सम्पूर्ण हृदय से किया; और केवल अपनी सामग्री ही नहीं ले आए परन्तु अपने आपको भी लेते आए थ। यही वह बात थी जिसने सचमुच ही दाऊद को आनन्दित किया; क्या आपके उद्धारकर्ता को यह बात और अधिक आनन्दित नहीं करेगी, यदि आप आए और स्वतन्त्रता पूर्वक और इच्छा पूर्वक अपना जीवन, अपना धन, अपने वरदान, इस महान और स्वर्गीय भवन को बनाने में दे दें?

केवल तब ही आप प्रभु के आनन्द की भरपूरी को जानेंगे, जो कि आपका बल है। यही वास्तव में सच्चा आनन्द है, और यदि आप इच्छा पूर्वक समर्पण के साथ आए तो यह पूरी कलीसिया में भी आनन्द ले आएगा। कृपा कर याद रखिए कि आप की आंखे हर समय प्रभु यीशु मसीह पर लगी रहें; उनकी विजय पर, और परमेश्वर का जीवता वचन लगातार आपका अगुवा बना रहे। उनसे कहे ‘प्रभु यीशु, मेरी जीभ, मेरी आँखें, मेरी सम्पत्ति – कोई भी वस्तु और प्रत्येक वस्तु जो कि मैं हूँ या मेरे पास हो - यह सब आपका है।”

मेरे प्रभु के मुझ से कहने के बाद पूरे दो वर्षो तक मैंने उसे दु:खी किया। जनवरी १९३० में, २५ वर्ष पूर्व, प्रभु ने स्पष्ट रुप से मुझसे कहा: ‘मुझे अपना जीवन दो, और तुम मेरे गवाह होंगे!’ मगर मैंने प्रभु से तर्क किया और उस से कहा मैं अपना धन देने को तैयार हूँ और अपना समय भी, परन्तु मैं एक प्रचारक बनने के लिए तैयार नहीं हूँ। इस

तरह पूरे दो वर्षों तक मैंने अपने प्रभु को चोट पहूँचाई और दु:ख दिया। अब मैं कैसे उन हानि और हृदय की कठोरता के वर्षों के लिए दु:खी होता हूँ, परन्तु मैं प्रभु की कितनी प्रशंसा भी करता हूँ कि उसने मुझे नहीं छोड़ा। उसकी सहनशीलता और उसक अनन्त धैर्य और प्रेम के लिए मैं उनके कितना धन्यवाद करता हूँ। अन्त में चौथी अप्रैल १९३२ को मैंने इच्छा पूर्वक स्वयं को उसकी सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

आज वह आपसे अनुरोध कर रहा है। उसका इन्कार न करें। पूर्ण समर्पण में उसके अधीन कर दीजिए – अपने आप को, आपका जीवन, आपका सब कुछ – और वह आपको आशीष देगा, और आप स्वयं आशीष होंगे।

६. संयोग में आनन्द
“प्रभु तुझ में आनन्दित होता है”
(यशा. ६२:४)

हमने परमेश्वर के वचन में से देखा है कि यदि हमें प्रभु के आनन्द को पूर्णता में जानना है तो कुछ ईश्वरीय हैं जो पूरे किये जाने हैं। जो कुछ भी परमेश्वर देता है, चाहे दान या अनुभव या आशीष, वह किसी ईश्वरीय नियम पर आधारित है; और चूँकि हम इन नियमों को जानने की खोज में नहीं रहते, सामान्यत: यें बहुत सरल होने पर भी उस आनन्द को प्राप्त करने में कभी-कभी हमें कई वर्ष लग जाते है। यहाँ तक कि पवित्र शास्त्र में लिखित परमेश्वर के जनों के जीवनों में भी (जैसा कि दाऊद के अध्ययन से प्रगट हुआ), हम परमेश्वर की इसन बदलने वाली माँग को देख सकते हैं। ये नियम इन सभों में और प्रत्येक स्थिति में पूरे होने ही चाहिए। क्योंकि ये नियम न बदलने वाले और ईश्वरीय हैं। ये पृथ्वी के नहीं पर आत्मिक हें। और, यद्यपि कि परमेश्वर हमारा सृष्टिकर्ता इन नियमों को हमें सिखाने के लिये विभिन्न माध्यमों और व्यक्तियों को उपयोग कर सकता है, परन्तु एक बात स्पष्ट है; हम में से किसी के भी जीवन में परमेश्वर जो कुछ करता है, वह सदैव ‘उसके’ स्वयं के ईश्वरीय नियमों और सिद्धान्तों पर आधारित होता है।

“जैसे दूल्हा अपनी दुल्हिन के कारण हर्षित होता है वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा” (यशा. ६२:५)

अब हम उस अन्तिम उद्देश्य के बारे में कहेंगे जिसकी और प्रभु के आनन्द के ये अनुभव हमारी अगुवाई कर रहे है। ऊपर का वचन एकदम ही दर्शाता है कि हमारे साथ उसके सभी व्यवहारों का उद्देश्य ‘उसके’ साथ सहभागिता है। जिस उद्देश्य की और वह

हमें पग-पग पर खींच रहा है, ताकि हम वापस न जा सकें, वह हमारे प्रभु के साथ सम्पूर्ण एकत्व और संयोग का उच्चतम आनन्द है।

दुष्टता, भ्रष्टाचार और पाप के इन दिनों में बहुत कम लोग मानवीय विवाहित जीवन का आत्मिक अर्थ जानते हैं, और इसीलिए हम कई घरों में दुःख, विरोध, दयनीय स्थिति और शोक पाते हैं। नया जन्म पाए हुए लोगों के विवाहित जीवनों में भी यही देखा जाता है। कुछ जीवनों में यह एक खुला हुआ भेद है, दूसरों में पारिवारिक भेद है; बात चाहे कुछ भी हो आपको मानना पड़ेगा कि बहुत कम हैं जो विवाहित जीवन की आशीष का आनन्द उठाते हैं। यह इसलिए होता है कि वे अपने विवाहित जीवन के आरम्भ से ही, उनको एकत्रित करने में परमेश्वर के विचार और उद्देश्य को समझने में असफल रहे हैं। कुछ लोग विवाहित जीवन का अर्थ बुरी अभिलाषाओं के सन्दर्भ में लेते हैं; दूसरे लोग सोना और चांदी के, जो वे विवाह के दहेज में प्राप्त करेंगे; अन्य, सजे-सजाए घरों या भोजन या वस्त्र के अर्थों में और अन्य दूसरे बच्चों के या पत्नी पर अधिकार प्राप्त करने के अर्थों में विवाह के बारे में सोचते हैं। इसीलिए हम पाते हैं कि बहुत से लोग यद्यपि कि नया जन्म पा चुके हैं, विवाहित जीवन के आनन्द को खो बैठे हैं। इस आनन्द को वे इसलिए नहीं पा सके क्योंकि उन्हें कभी भी विवाहित जीवन के नियमों का पता न लगा। ऐसे सभी लोग जब बाइबल में 'दूल्हा और दुल्हिन' शब्द पढते हैं तो वे उनके अपने ही अर्थ लगाने का प्रयत्न करने के लिए विवश हो जाते हैं।

परन्तु बाइबल कहती है, 'दूल्हा दुल्हिन के कारण हर्षित होता है।' यह शुद्ध आनन्द के बारे में बताया है जो केवल उस जीवन की सहभागिता से उत्पन्न होता है जो परमेश्वर का वरदान है। हमें आवश्यक है कि परमेश्वर के वचन से केवल एक या दो घटनाओं को

स्मरण करें, और फिर हम स्वयं ही देखेंगे कि विवाहित जीवन के लिए परमेश्वर का विचार क्या हैं।

"मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए" (उत्पत्ति २:१८)

आइये, हम पहिले आदम और हव्वा की ओर देखें। आदम को हव्वा देने का परमेश्वर का उद्देश्य उसे सहभागिता के लिए एक साथी देना था। परमेश्वर चहाता है कि हम में से प्रत्येक उस सच्ची सहभागिता को प्राप्त करें। सहभागिता यह शब्द बाइबल में एक अद्वितीय शब्द हैं, और कोई भी उसे वास्तव में समझ नहीं सकता यदि उसका नया जन्म नहीं हुआ है। पिता और पुत्र के साथ सहभागिता विशेष रुप से और एकमात्र और सम्पर्ण रुप से उनके लिए हैं, जिन्होंने 'उसमें' नए जीवन को प्राप्त कर लिया है, और जो 'उसके' साथ और 'उसमें' सदा काल बने रहते हैं। इस रीति से हम परमेश्वर के प्रेम की परिभाषा देते हैं। यह है परमेश्वर का जीवन हम में बहता हुआ। सच्ची सहभागिता आपस में होती है, और हमारे अन्दर उसके पुत्र से सच्ची ईश्वरीय समानता और अनुरुपता लाती है।

मैं ने व्यक्तियों को देखा है, जिन्होंने कई वर्षों तक एक साथ बहुत सुखी विवाहित जीवन व्यतीत किया। जब मैं ने पहली बार उन्हें देखा, उनमें थोड़ी भी एक दूसरे से समानता नहीं थी, परन्तु कई वर्षों के विवाहित जीवन के बाद पति या पत्नी से अधिक जुड़वा भाई बहिन दिखते है। उनके बीच में इतनी अधिक समानता उस सुखी संयोग के कारण है। यदि यह इस पृथ्वी पर के विवाहित जीवन में सत्य है तो आपके अपने प्रभु के साथ अनन्त संयोग और घनिष्ठता के सम्बन्ध में वह कितना अधिक सत्य हो सकता है।

यह हमारे लिए प्रभु का अन्तिम उद्देश्य है। शास्त्र कहता है, जब परमेश्वर ने हव्वा को आदम में से बनाया, उसने आदम की पसली का सिर्फ एक भाग ही लिया और फिर उस अत्यन्त छोटी पसली से उसने हव्वा को आदम के समान आकार और स्वभाव में बताया। इतने अधिक वे एक समान थे कि आपनें उन्हें उस दिन देखा होता तो शायद आप कहते कि वे भाई और बहिन थे, 'क्योंकि वे दोनों परमेश्वर के स्वरुप में बनाये गये थे।'

फिर भी क्या उस छोटी-सी हड्डी, जिसे परमेश्वर ने आदम में से निकाला, और उस स्त्री के बीच, जिसे उसने आदम के पास उसकी स्त्री के रुप में लाया, कोई तुलना हो सकती थी? कल्पना कीजिए, परमेश्वर हड्डी का टुकड़ा निकालता है और उसे आदम के सामने उसकी अपूर्ण स्थिति में रखता है। क्या यह हड्डी के उस टुकड़े के साथ सहभागिता रख सकता है? परन्तु परमेश्वर ने उस पर श्वास फूँकी और उसे आकार दिया और वह हव्वा बन गई, आदम का ही प्रतिरुप। और हम अपने नए जन्म के पूर्व ठीक उस सूखी हड्डी के समान होते है। आप चाहे कोई भी हों यदि आप अभी तक नया जन्म नहीं पाए है तो आप उस छोटी सूखी हड्डी से बढ़ कर नहीं हैं, हर प्रकार की निर्बलता और रोग और कमियों से भरपूर हैं, और ईश्वरीय समानता से कुछ भी निकटता नहीं। वास्तव में आप बहतर हैं उस पाप के कारण जिसने हमारा रुप बिगाड़ दिया है और हमें कुरुप बना दिया है, जिसने अभी तक आदम को छुआ तक न था। हमारी नष्ट और अपवित्र स्थिति में हम उस सुखी हड्डी के टुकड़े हैं जो आदम में से आई थी। फिर भी 'उसका' हमारे लिए उच्च उद्देश्य है कि हम उसके समान रुप में हो जाएँ और जब तक कि उसक पुत्र के स्वरुप में न ढल जाएँ हमे परीवर्तित करने को वह तैयार और समर्थ है; जैसा कि परमेश्वर १ कुरिन्थियों १३:१२ और १ यूहन्ना ३:२ में प्रतिज्ञा करता है, हम उसके समान होंगे। ऐंसी सच्चाई, ऐसे उद्देश्य को इस पृथ्वी पर समझना कठिन है, परन्तु वास्तव में ऐसा ही होने वाला है।

अब परमेश्वर हम से कह रहा है, 'जैसा दूल्हा दूल्हिन के कारण हर्षित होता है वैसे ही मैं तुम्हारे कारण आनन्दित होऊँगा।' "दूल्हिन" शब्द बाइबल में उस सबसे घनिष्ट सहभागिता और सम्बन्ध के बारे में बताता है जो दो व्यक्तियों के बीच सम्भव है, क्योंकि जो कुछ पति और पत्नी एक दूसरे को दे सकते हैं, वह ऐसी वस्तु है जो दूसरे व्यक्तियों के द्वारा कभी भी बांटी नहीं जा सकती। पति और पत्नी एक दूसरे को जो दे सकते हैं वह मां, या भाई, या बहिन या किसी सम्बन्धी के द्वारा नहीं दिया जा सकता। एक रीति से यह समान रुप से अद्वितीय है कि मनुष्य और परमेश्वर के बीच एक गहरा रहस्यमय संयोग हो सकता है जिसे स्वर्ग में स्वर्गदूत भी अनुभव नहीं कर सकतें, क्योंकि वे उस ईश्वरीय प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकते जिसे परमेश्वर मनुष्य को देता है। यही तो उसके छुटकारे का आश्चर्य कर्म है।

अब आइये, हम कल्पना करें कि एक सभ्य और अच्छा दिखने वाला व्यक्ति एक सादी काले रंग की असभ्य लड़की से विवाह करता है और ऐसा अपने स्वयं के चुनाव और उसके लिए केवल अपने उस प्रेम के कारण करता है जो वह उससे रखता है। वह उससे विवाह करता है किसी भी रीति से विवश किए जाने से नही परन्तु केवल उसके लिए अपने शुद्ध आन्तरिक प्रेम के कारण। वह कोयले के समान काली हो सकती हैं और पूरे नगर में वह सबसे कुरुप स्त्री हो सकती है, परन्तु वह मनुष्य उस स्त्री को वह दे सकता है जो वह किसी दूसरे को नहीं दे सका; क्योंकि उनका विवाह एक शुद्ध आन्तरिक प्रेम और संयोग पर आधारित है।

इसी रीति से परमेश्वर आपको और मुझे वह ईश्वरीय प्रेम दे सकता है जिसे स्वर्गदूत न तो ग्रहण कर सकते है और न उनका आदर कर सकते हैं। वह स्वर्गदूत को ज्ञान दे सकता है, वह उन्हें शक्ति और सामर्थ दे सकता है, स्वर्ग में करने के लिए वह उन्हें कई

कठिन कार्य दे सकता है, परन्तु वह उन्हें अपना गहरा, छुटकारा देनेवाला, अनन्त प्रेम नहीं दे सकता। यह हम पूरी भय-भक्ति के साथ और परमेश्वर के अधिकार के साथ कह सकते हैं, क्योंकि आनेवाले विश्व पर स्वर्गदूत शासन नहीं करेंगे परन्तु मनुष्य जो अभी उसके लोहू के द्वारा छुड़ाए गए हैं। जैसा कि इब्रा० २.५-८ हमें बताता है, जग स्वर्गदूतों के आधीन नहीं होने वाला है परन्तु मनुष्यों के होगा।

वह क्या था जिसने प्रभु यीशु को अपनी देह तोड़े जाने के लिए दे देने को विवश कर दिया? इसका उत्तर यूहन्ना ३:१६ में है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" परमेश्वर का प्रेम सहभागिता और मित्रता को खोज रहा था अर्थात् मित्रों को जो उसके साथ सदा रह सकें इसलिए वह प्रेम क्रूस पर उण्डेले जाने के द्वारा प्रगट हुआ। जब आप नया जन्म पाते हैं, परमेश्वर उसी प्रेम को आप पर उण्डेल देता है और आप के कारण हर्षित होता है। एक दिन आप उसके पास उसकी छुड़ाई हुए कलीसिया के मध्य में से एक के रुप में जाते हैं, उसकी तैयार की गई दुल्हिन के रुप में जो उसके हृदय को सन्तुष्ट करने के लिए ठहराई गई है; उसी तरह जिस हव्वा आदम को उसकी एक संगिनी एक मित्र, एक सहयोगी होने के लिए और उसके अन्त:करण की चाहनाओं को सन्तुष्ट करने और जो आनन्द वह चिड़ियों, पेंड़ों या जानवरों के साथ नहीं उठा सकता था उसे बांटने के लिए दी गई थी।

"आओ हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुँचा: और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है" (प्रकाशित १९:७)

ऐसे प्रेम से, जिसके बारे में हम आपसे कहत रहे हैं, परमेश्वर अभी आप को बुला रहा है। इसीलिए प्रकाशित वाक्य २१ में कलीसिया की तुलना एक ऐसी दुल्हिन से की गई है जिसने अपने पति के लिए सिंगार किया हो – एक दुल्हिन जो परमेश्वर के प्रेम और आनन्द और ज्ञान को और अपने प्रभु के हृदय ही के भेदों को सम्पूर्णता में ग्रहण करने के लिए तैयार हो।

वास्तव में, मानवीय विवाहित जीवन के आरम्भ ही में पति और पत्नी एक दूसरे को पूरी रीति से नहीं समझते। पत्नी अपने पति से कई बातें कह सकती है, परन्तु दुल्हिन के रुप में वह उससे कुछ बाते कहने की हिम्मत नहीं कर सकती जो कि केवल कई महिनों या वर्षो तक एक दूसरे को समझने के बाद ही कही जा सकती है। परन्तु जब वे एक साथ ईश्वरीय नियमों का पालन करते हैं और जब आपसी विश्वास और भरोसा बढ़ता है तब वह उसे सब कुछ बता सकेगी।

समय आ रहा है जब हम अपने प्रभु को सब कुछ बता सकेंगे और वह भी हम को सब कुछ बता सकेगा। कुछ लोग कहते हैं यदि पति पूरे महिने का वेतन अपनी पत्नी को देता है तो यह सच्चे प्रेम का चिन्ह है, परन्तु जब आप स्वर्ग जाएँगे प्रभु बिना विवश किए सब कुछ आप से बांट लेगा, और इस पर भी आप सम्पूर्ण अनन्त काल के लिए उसकी आधीनता में रहने के लिए आनन्दित होंगे।

अब क्या आप समझते हैं कि क्यों आपका परमेश्वर चाहता है कि आप उसके हों? अब क्या आप समझते है कि क्यों वह आपको बुला रहा है, आपसे प्रेम कर रहा है, और अनुशासन दे रहा है? यह इसीलिए है कि वह आप के कारण स्वर्गीय हर्ष से हर्षित हो और परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ आप वह घनिष्ठता रख सकें जिसे स्वर्गदूत भी कभी प्राप्त नहीं कर सकते। यह इसलिए है कि आप सबसे मधुर प्रेम का सम्पूर्ण आनन्द

अनन्त काल तक उठा सकें, और आप स्वर्गीय अनन्त काल के प्रेम से प्रेम किये जाने का आनन्द प्राप्त कर सकें।

फिर क्यों ऐसे प्रेम को अस्वीकार करें, जब कि समस्त स्वर्गीय शक्तियाँ परमेश्वर की महिमा और सौन्दर्य को आप में देखने के बाट जोह रही हैं, और परमेश्वर चाहता है कि आप उसके हर्ष और स्नेह का विषय बनें? कृपा करे 'उसे' इस उद्देश्य से ग्रहण करें कि प्रभु का आनन्द वास्तव में आपका बल हो, और वह आपके कारण गीत के साथ आनन्द मनाए। क्या आप उसे अनुमति नहीं देगे कि वह आपको उस आनन्द में ले आए?

७. स्थायी आनन्द

"तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।"

(भजन १६:१०)

हमने देखा कि कैसे प्रभु हम में आनन्द मनाना आरम्भ कर देता है जब वह स्वयं अपने में एक पूर्ण और अन्तिम स्थिति तक हमें ले आता है। तब उसकें साथ हमारा सम्बन्ध दूल्हे के लिए तैयार हो रही दुल्हिन के समान होता हे। जब उद्धार का काम गहरा किया जा चुका हो और तब तक सम्पूर्ण किया जा चुका हो कि हम जान गए हों कि प्रभु के साथ हमारा संयोग कितना घनिष्ठ है, और जब हम कुछ-कुछ समझने लगे हों कि वह क्या चहता है कि हम बनें, तब उस आपसी घनिष्ठता के लिए अपने आपको तैयार करना हमारे लिए सहज हो जाता है।

इससे पहिले, कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के पास आए और जब हम अपने पापों में थे, हम केवल यही सोचा करते थे कि हम उससे क्या प्राप्त करेंगे। पाप की सामर्थ से बच निकलने के लिए जब हमने पाप से संघर्ष किया और समझ लिया कि हम कितने निर्बल और शक्तिहीन है तो सहायता के लिए हम उसे पुकार उठे। जब हम संकट या क्लेष में थे, तो हमारी परीक्षाओं से हमें छुड़ोने के लिए हमने उसे पुकारा और जब हम अपने प्रियजनों के द्वारा असफल किए जाने या उनके हम से अलग किये जाने के कारण निराश हो गये तो हमने सांत्वना माँगी और वास्तव में सांत्वाना पाई, परन्तु इन सभी बातों में हमने उद्धार को केवल वस्तु मात्र के रुप में समझा जो हम उससे प्राप्त कर सकते थे।

अब हम यशायाह ६२ से देखेंगे, जो हमारा प्रभु चाहता है कि हम उसके लिए बने, और किस तरह हम में अपने लिए कुछ पाने की अपेक्षा करता है और आशा रखता है।

"सिय्योन के निमित्त में चुप न रहूँगा, और यरुशलेम के निमित्त मैं चेन न लूँगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता प्रकाश की नाई और उसका उद्धार जलने हुए दीपक के समान दिखाई न दे" (यशा. ६२:१)

यहाँ परमेश्वर हम से कह रहा है कि अनन्त से जिसकी वह बाट जोहता रहा है उसे जब तक वह हम से पा न ले तब तक वह विश्राम नहीं करेगा। उसे बार-बार हमारे पास आना पड़ता है और अपने 'वचन' से हमने इसके बारे में तब तक बोलना पड़ता है जब तक कि हम उसने विचरों को पूरी रीति से समझ न लें। उसे कई वर्षों तक हमें अनुशासन और प्रशिक्षण देना पड़ता है जब तक हमारे हृदय उन्हें ग्रहण करने के लिए तैयार न हों जाएँ। तो आइये, हम विश्वास से परमेश्वर के हृदय में प्रवेश करने का प्रयत्न करें और उन चाहनाओं और इच्छाओं को देखें जो वह हमारे लिए रखता है।

उसके प्रगटीकरण में हम तक प्रकाश लाने के लिए स्वयं परमेश्वर का तेज हमारे अन्धकार पर प्रकाशित हुआ है। अब उसकी धार्मिकता और उद्धार जलती हुई ज्योति के समान तेजोमय हैं जो सब प्रकार का अन्धकार पूरी रीति से बाहर भगाया जा चुकने तक प्रकाश देते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि हम ऐसी धार्मिकता प्रदर्शित करें जो जगत के किसी भाग में किसी भी राष्ट्र के द्वारा प्राप्त नहीं की गई हो। शताब्दियों तक पूरे जगत में मनुष्य उच्च नैतिक नियम बनाकर उन्हें प्राप्त करने का संघर्ष करके धर्मी बनने का प्रयत्न करते रहे हैं। प्रत्येक देश में, प्रत्येक जाति में, प्रत्येक धर्म में मनुष्यों ने इस तरह संघर्ष किया, परन्तु अन्त में संघर्ष छोड़ देना पड़ा और उन्हें हार और असफलता मान लेगी पड़ी। परन्तु सामर्थी और पवित्र परमेश्वर अपनी स्वयं की धार्मिकता जिसमें कोई दोष या कमी नहीं है, आपको प्रदान करता है। यहूदा के शब्दों में "अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है और

अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है ... उसकी महिमा हो"।

परमेश्वर हमें उसकी स्वयं की उपस्थिति में स्वर्ग के दूतों के सामने निर्दोष खड़ा करना चाहता है। परन्तु यदि हम अपना भरोसा अपनी स्वयं की धार्मिकता पर रखें तो वह कभी भी ऐसा नहीं कर सकता। मानवीय धार्मिकता मैले चिथड़ो को छोड़ और कुछ नहीं है। जो कुछ मनुष्य अपने स्वयं के प्रयत्नों से प्राप्त कर ले वह उसे थोड़े समय के लिए ठीक दिखाई पड़ सकता है, परन्तु वह स्वर्ग की खोजने वाली दृष्टि के सामने नहीं ठहर सकता। परन्तु वह स्वर्ग की खोजने वाली दृष्टि के सामने नहीं ठहर सकता। परन्तु आप में परमेश्वर की धार्मिकता ऐसे स्वभाव की है कि यदि आप उसे प्राप्त कर लें तो स्वर्गदूत भी दोष लगाने के लिए आपकी ओर उँगली नहीं दिखा सकते। परमेश्वर न केवल आपके पापों को क्षमा करता है परन्तु आपको गिरने से बचाने और उसकी परिस्थिति में महिमा और आनन्द से निर्दोष खड़ा करने का कार्य भी हाथ में लेता है। तब एक भी प्राणी आपसें कोई धब्बा या दोष देख नहीं सकेगा। ऐसी है वह धार्मिकता जो परमेश्वर हमें प्रदान करताहै। क्या आपने ऐसी धार्मिकता प्राप्त कर ली है या अभी किसी दूसरी वस्तु में भरोसा रखते हैं? मुझे बताइये, क्या मानवीय भलाई और शुद्धता इस प्रकार की हैं? आपके मित्र और पड़ोसी आपकी सराहना कर सकते हैं और आप से कह सकते हें कि आप इतने अच्छे और दयालु और साफ हैं। परन्तु आप जानते हैं कि मानवीय स्तरों के अनुसार भी यह सच नहीं है; अब यदि ईश्वरीय अधिकारियों के द्वारा आपकी परीक्षा हो तो आपकी क्या स्थिति होगी? उस धार्मिकता की तुलना में, जो 'वह' देता है आपकी "धार्मिकता" कैसी होगी?

"तब अन्य जातियाँ तेरा धर्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से निकलेगा" (यशा. ६२:२)

परमेश्वर अपने आदर्श को १ कुरिन्थियों १:३० में प्रगट करता है; "मसीह यीशु... जो हमारे लिए ... धार्मिकता ठहरा।" वह स्वयं हमारी धार्मिकता है। पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य उसमें कोई दोष नहीं पा सकता। वही अकेला व्यक्ति है जिसके बारे में हम कह सकते हैं कि उसमें कोई पाप नहीं था, और उसने कोई पाप नहीं जान, और यहाँ तक कि स्वर्ग में भी वह सभी करुबावों और सारापदूतों पर भी सर्वोच्च है। उसके पूरे किए गए कार्य पर विश्वास करने के द्वारा हम 'उसी' की धार्मिकता की प्राप्त करते हैं, इसी कारण जो लोग आलोचन से भरे हैं वे भी उसमें कमी नहीं पा सकते। यही धार्मिकता आज प्रगट और प्रदर्शित की जानी है। "अन्य जाति ... देखेंगे ..." यदि स्वर्गीय अधिकारी 'उसकी' धार्मिकता को आप में देख रहे हैं तो यह न्याय संगत है कि अब मनुष्यों को आप में कोई कमी निकालने का कोई आधार ही नहीं होना चाहिए। "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है" (गल० ३:२७)।

"बरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर के अभिलाषों को पूरा करने का उपाय न करो" (रोमियों १३:१४)। जिस तरह अन्दर की माँस पेशियों की हमारा चमड़ा ढंकता है, उसी प्रकार सामर्थी उद्धारकर्ता की धार्मिकता स्वयं हमें ढक लेती है जब हम 'उसे' ग्रहण करते हैं। अब हम वही आपको परमेश्वर के अधिकार से प्रदान करते हैं। परमेश्वर का वचन यह कहता हैं; अपने अनुभव के द्वारा हमने इसे सत्य सिद्ध किया है, अब हम आपकी वही प्रदान करते है और उसके साथ यशायाह ६२:२ की यह प्रतिज्ञा भी: "तब अन्य जातियाँ तेरा धर्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे।"

सम्पूर्ण विश्व भर में कई शताब्दियों मे कई महान राजा हो गए हैं, सामर्थी राजा और बुद्धिमान राजा, वे राजा जिन्होंने कई युद्ध लड़े और जिन्होंने अपने राज्य को समृद्धिपूर्ण बनाया। वे आए, वे जिए, वे मर गये और अब उनका नाम भुलाया जा चुका है, और कुछ

उन्होंने किया और प्राप्त किया शुल्य के बराबर हो चुका है। इन सांसारिक राजाओं ने अपनी महान उपलब्धियों और महिमा के बारे में गर्व से बातें की होंगी, परन्तु जब आपकी महिमा जो आपकी मसीह में प्राप्त हैं उनको दिखाई जाएगी तो वे लज्जित हो जाएँगे, और उन्हें मान लेना होगा कि जो कुछ इस पृथ्वी पर उनके पास था वह आज जो आप में देखते हैं उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है।

हमारा प्रभु चाहता है कि आज हम यहाँ उसकी महिमा और सौन्दर्य के पात्र बनें। पृथ्वी पर वह हमें ईश्वरीय स्वभाव का समभागी और पवित्र आत्मा का मन्दिर बनाता है ताकि हम उसकी स्वयं की पवित्रता के प्रगटीकरण, उसकी मीरास के भागीदार उसके जीवन से उमड़नेवाले पात्र बन जाएँ। वह हमें उसकी स्वर्गीय बुलाहट के अनुकूल बनाता है और जब पवित्र आत्मा का कार्य पृथ्वी पर हमारे विश्वास पूर्ण जीवन में सिद्ध हो चुकता है तब हम आदर और महिमा को स्वर्ग में हमारी बाट जोहते हुए देखेंगे (लूका १९:१७)। कई सन्तों ने अपनी मृत्यु के ठीक पहिले स्वर्ग के बारे में कुछ देखा है, और जब कि उसके सम्बन्धी इसलिए रो रहे होते है कि वह अब है तब वह मरने वाला व्यक्ति ही उन्हें सांत्वना देना आरम्भ करता है। वह कहता है: 'मेरे लिए मत रोओ। मैं स्वर्ग को खुला और स्वर्गदूतों को मेरा स्वागत करने के लिए तैयार देखता हूँ।' उसके चारों ओर दूसरे न देख सकते हों; परन्तु जो प्रभु द्वारा स्वर्ग में बुलाये जाने के निकट है उसे स्वर्गीय वस्तुओं को देखने के लिए नई आँखे दी जाती है। कुछ ने अपनी मृत्यु से पहले वास्तव में स्वर्गदूतों को गाते सुना है। कुछ प्रकाशित मुख से घोषणा करते हैं कि वे प्रभु यीशु को देखते हैं और यद्यपि कि बड़ी पीड़ा में हैं परन्तु उनके प्रभु के आनन्द में पहिले ही प्रवेश कर चुके हैं।

परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रत्येक विश्वासी जो कि छोटी सी छोटी बात में विश्वास योग्य पाया जाएगा उसे ऐसा स्वागत मिलेगा। क्या कोई सांसारिक राजा कहीं पर

ऐसा आदर प्राप्त करेगा? फिर भी ऐसी महिमा आपके लिए रखी हुई है: "और राजा तेरी महिमा देखेंगे।" यदि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते तो अपनी मृत्यु तक आप प्रतीक्षा कीजिए और फिर आप जान जाएँगे कि जो मैं कहता हूँ वह सच है या नहीं। आप निर्धन या अनपढ़ हो सकते हैं आप बाइबल या बाइबल के सिद्धान्तों के बारे में अधिक न जानतें हों, परन्तु यदि आप अपने प्रभु से विश्वास योग्य रहे तो एक स्वर्गीय स्वागत आपकी बाट जोह रहा है।

"और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से निकलेगा" (यशायाह ६२:२)

एक नया नाम! पृथ्वी पर मनुष्यों के बहुत से नाम और उपाधियाँ जैसे बहादूर, खान बहादूर, महाराज आदि हो सकते हैं परन्तु जिन लोगों के पास ऐसी उपाधियाँ या सामर्थ या अधिकार होता है वे मनुष्य के सम्मान की माँग करते हैं। परमेश्वर कहता है कि वह आपको एक बिलकुल नया नाम देगा जिसे वह स्वयं चुनेगा।

पृथ्वी पर हमारे संगी साथी हमारे चरित्र का वर्णन करने वाले नाम हमें देते हैं। कुछ हमें सुस्त, कुछ घमण्डी, दूसरे हमें लोभी कहते हैं, दूसरे बेकाम कहते हैं, फिर और दूसरे कहते हैं कि हम कुरुप और मूर्ख है। यह सभी नाम हमारी कमजोरियों को प्रगट करते हैं, और कई बार हमारे जीवन भर हमारे पीछे लगे रहते है। कोई अन्तर नहीं पड़ता कि किस नाम से मनुष्य आपको पृथ्वी पर बुलाते है; जब आप मन फिराते हैं और नया जन्म पाते है, प्रभु यीशु मसीह अपने लोहू से आपके बीते हुए समय को ढाँप देते हैं और चरित्र की प्रत्येक निन्दा और कलंक को हटा देते हैं और आपको एक बिलकुल नया नाम देते हैं जिसको आपके सिवाय प्रभु परमेश्वर ही जानते हैं। वह उस समय प्रगट होगा जब सब वस्तुएँ नई की जा चुकेंगी। हम प्रकाशित वाक्य २१:५ में पढ़ते हैं, "देखो, मैं सब कुछ

नया कर देता हूँ।” उस दिन प्रत्येक वस्तु नई होगी, यहाँ तक कि आपका अपना व्यक्तित्व भी।

आप में से कुछ नई वस्तुएँ बहुत पसन्द करते हैं। मुझे याद है जब मैं बच्चा ही था मेरे पिता ने मुझे अंग्रेजी जूतों का एक नया जोड़ा लाकर दिया, और उनके लिए मैं इतना सावधान रहता था कि यदि मैं रास्तें में एक काँटा देख लेता तो मैं तुरन्त जूतों को निकाल लेता था। मैं चाहता था कि जूते चककीले, और प्रकाशित बने रहें। आपको नये कपड़े या घर या मित्र पसन्द हो सकते हैं, परन्तु वे सब पुराने हो जाएँगे। मित्र पुराने हो जाते हैं, इसी तरह पति और पत्नियाँ भी! आप स्वयं भी पुराने हो रहे हैं। मानवीय भ्रष्टता के कारण पृथ्वी पर कुछ भी नया नहीं रह सकता।

परन्तु जब आपने नया जीवन प्राप्त कर लिया है जो कि अनन्त हैं, तो परमेश्वर सभी समय आपको नया बनाता जाएगा। अनन्त जीवन में कोई वृद्धावस्था नहीं है। स्वर्ग में आप ऐसी कोई वस्तु नहीं देखेंगे जो कि पुरानी हो चुकी है। वहाँ पर प्रत्येक वस्तु नई और ताजी और प्रकाशवान और चमकीली होगी। प्रति दिन आप कुछ नया सिखते और प्राप्त करते जाएँगे। प्रभु कहते हैं, ‘मैं तुम्हें एक नया नाम दूँगा’, यह सूचित करते हुए कि हमें अनन्त काल तक नया रखने के लिए उसने कौन सी योजना बनाई है। मानवीय प्रयत्न आपको जवान नहीं रख सकते। कुछ बूढ़े लोग अपने बालों को काला करते हैं, क्योंकि वे जवान दिखाना चाहते हैं। कुछ माता पिता बच्चे नहीं चाहते क्योंकि इसके द्वारा वे जवान बने रहने की आशा करते हैं। यदि आप की विचारधारा ऐसी ही है तो आप हत्यारे हैं। परन्तु मनुष्यों को जवान बनाए नहीं रख सकते। मानवीय देह पुरानी होनी ही है। परन्तु अनन्त में निरन्तर ताजगी और युवावस्था रहेगी।

"तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी" (यशायाह ६२:३)।

ये दोनो वस्तुएँ एक साथ रहती है, मुकुट और राजमुकुट। कई राजाओं कें पास दोनों हैं। राज्यभिषेक के समय उन्हें एक मुकुट बना कर दिया जाता है कि उस अवसर पर राजा की महिमा को बताता है। परन्तु उनके पास दूसरा मुकुट होता है, जो कि राजपरिवार में कई वंशो से रहा है। यही इन शब्दों का अर्थ है: प्रभु के हाथ में एक मुकुट और तेरे परमेश्वर के हाथ में एक राजमुकुट।

सबसे पहिले, आप परमेश्वर की महानता को प्रगट करने वाले और जो कुछ परमेश्वर ने आंतरिक रुप से आपके अन्दर किया है उसे प्रगट करने वाले एक मुकुट बनते है। आप शराबी रहे हों परन्तु सामर्थी प्रभु ने आपको शुद्ध और नया बनाया है, आप लज्जा का जीवन जीते रहे हों परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा आप छुड़ाए नए हैं और शुद्ध किये गये हैं।

दूसरे, हम उस महानता को सभी सन्तों के साथ बाँटते है जो सृष्टि के आरम्भ ही से रहे हैं। जब हम स्वर्ग जाएँगे तो हम इब्राहीम, यूसुफ, मूसा, यशायाह और दानिय्येल को देखेंगे, और उनसे परिचय कराने की आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि अनन्त जीवन का स्वभाव ही ऐसा है कि वह हमें परमेश्वर के सभी युगों के सभी पुत्रों से सम्पूर्ण रुप से एक बना देता है। हम स्वर्ग की सम्पूर्णता और सिद्धता का आनन्द प्राप्त करेंगे। जब हम वहाँ जाएँगे तो हम वहाँ अजनबियों के सामान नहीं रहेंगे, परन्तु एक स्वर्गीय परिवार के रुप में सम्पूर्ण मेल और सामंजस्य के साथ रहेंगे; और सामूहिक रुप से हम परमेश्वर की सामर्थ और अधिकार की प्रगट करेंगे। इस तरह से हम महिमा के मुकुट और हमारे परमेश्वर के हाथ में एक राजमुकुट कहलाएँगे।

"तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा और तेरी भूमि ब्यूला कहलाएगी; क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है और तेरी भूमि सुहागिन होगी"। (यशायाह ६२:४)

क्या आपको स्मरण है किस तरह एस्तेर की पुस्तक में हम कई कुँवारियों को राजा के पास लाई जाती देखते हैं, जिनमें एस्तेर स्वयं भी थी। जैसा हमें बताया गया हैं दूसरी कुँवारियों ने अधिक सुन्दर दिखाई देने के लिए कई तेलों और मसालों का उपयोग किया, परन्तु उनमें से कोई भी राजा को प्रसन्नता नहीं पहुँचा सही। फिर भी जब एस्तेर उसके सामने लाई गई राजा ने उसे सब स्त्रियों से बढ़ कर प्रेम किया, और उसने राजा की दृष्टि में उन सभों से बढ़ कर अनुग्रह प्राप्त किया। उसमें कुछ ऐसा था जिसने राजा को प्रसन्न किया, वह केवल मानवीय सुन्दरता मात्र नहीं थी। और इस प्रकार की ही कोई वस्तु – जो कि अन्तरिक है और मसीह के समान है – केवल वही वस्तु इन शब्दों का अर्थ समझ सकती है: "प्रभु तुझ से प्रसन्न है"।

"तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी"। इस पृथ्वी पर यदि आपका घर सुखी न हो और जो आप चाहते हैं वह आपको न मिलता हो, तो आप उससे बेहतर वस्तु की चाहना करने लगते हैं। परन्तु जब आप स्वर्ग पहुँचें तब बीते समय की आपकी सब असफलताएँ और निराशाएँ ढांप दी जाएँगी। यहाँ पर, कई वर्षों तक आप से प्रेम करने वाला कोई न हो, आपके आँसू पोंछने वाला कोई न हो, कोई भी आपका हाथ पकड़ कर यह कहने वाला न हो कि 'मैं तुम्हारे लिए दुखी हूँ'; परन्तु स्वर्ग में आपका परमेश्वर आपसे प्रेम करेगा और आपके कारण आनन्दित होगा, ओर आपसे कहेगा: 'मेरे बच्चे, पृथ्वी पर कोई भी तुम से कभी भी जितना प्रेम कर सकता था उससे अधिक प्रेम मैं तुम से करता हूँ।' परमेश्वर आपसे प्रसन्न होगा। वह आप से प्रेम करेगा और इसके उत्तर में आप उससे प्रेम करेंगे।

पृथ्वी पर कभी-कभी ऐसा होता है कि आप किसी से प्रेम करते हैं जो आपसे प्रेम नहीं करता, या कोई आपसे प्रेम करता है और आप उत्तर नहीं देते। परन्तु स्वर्ग में हर समय हर समान रुप से प्रेम किए जाएँगे और प्रेम करेंगे। प्रभु स्वयं हम से प्रसन्न होगा, हम से प्रेम करेगा और प्रेम पाएगा। पृथ्वी पर हो सकता है कि कोई आपका सच्चा मित्र न हो, परन्तु परमेश्वर का प्रेम इस कमी को सम्पूर्णता से पूरा करेगा। और वहाँ उसकी सूर्य-चमक का आप पूरे अनन्त काल तक सेवन करेंगे।

छोड़ दिए जाने से भी न डरें। परमेश्वर होने से 'वह' सबसे वही प्रेम दिखा सकेगा, क्योंकि वे सब मिल कर उसकी एक और एकमात्र दुल्हिन बनते हैं। यहाँ इस पृथ्वी पर, जिनके दो पत्नियाँ हैं उन्हें बहुत कष्ट होता है क्योंकि घर में लगातार कलह होता रहता है – एक पत्नी दूसरी से ईर्ष्या करती है। स्वर्ग में इस प्रकार की कोई ईर्ष्या नहीं है। वहाँ एक देह हैं, एक दुल्हिन, और सभों में एक स्वर्गीय जीवन हैं, और आप सब अपने उद्धारकर्ता से समान मधुरता और प्रेम प्राप्त करेंगे।

"तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के कारण चुपका रहेगा; फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा" (सपन्याह ३:१७)

इस विश्राम में, जिस में कि परमेश्वर चाहता है कि हम आनन्द उठाएँ, प्रवेश करना कैसे विशेषधिकार की बात है। परन्तु इस से भी बढ़ कर कुछ है। जिस रीति से गौरैया अपने घोंसले में विश्राम पाती है, उसी रीति से परमेश्वर हम में निवास स्थान ढूँढ़ता है – एक उसे सुख, विश्राम, और सन्तोष देने के लिए इस पृथ्वी में से एक कलीसिया, चुने हुए लोगों के एक समूह को वह इकट्ठ किए जा रहे हैं, ताकि प्रभु के लिए एक 'घोंसले' के

समान बन जाएँ। यही वह आनन्द है जो कि आपका बल है, और यही आनन्द और महान प्रेम हम आपको प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रदान करते हैं।

प्रभु आपको सम्पूर्ण रीति से धोएगा, क्षमा करेगा और अनन्त काल के लिए आप से प्रेम करेगा – और "वह अपने प्रेम में विश्राम करेगा"। परमेश्वर की भेंट का तिरस्कार न करें, और न उसे अस्वीकार करें। प्रभु यीशु मसीह आपका प्रेमी उद्धारकर्ता आपके बाजू में खड़ा है, आप से अनुरोध कर रहा है और कह रहा है: 'मेरे पुत्र, मेरी पुत्री, मुझे अपना हृदय दो; मेरे आनन्द को तुम्हारा बल बनने दो, ओर मेरे जीवन को तुम्हारा जीवन।' आमीन।